Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

पुरुषार्थ

निर्फल रुंखज होय,
निर्फल होय जावे अस्त्री।
सुणज्यो भवियण लोय,
पिण करणी कदे निर्फल नहीं।।

वृक्ष फल रहित हो सकता है। स्त्री बांझ हो सकती है। पर करणी कभी निष्फल नहीं हो सकती।
– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 21 • 23 फरवरी - 01 मार्च 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 21-02-2026 • पेज 12 ₹ 10 रुपये

भौतिक संपदा की अपेक्षा आध्यात्मिक संपदा है मूल्यवान : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

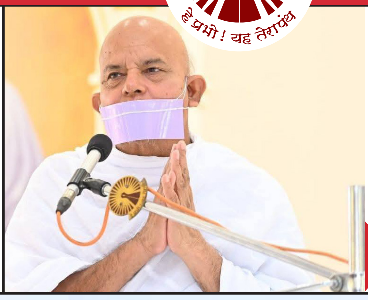

मोक्ष की प्राप्ति में गुस्सा और अहंकार उत्पन्न करते हैं बाधा : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

योगक्षेम वर्ष की पृष्ठभूमि त्रिदिवसीय अनुष्ठान का शुभारंभ

पूर्व कर्मों का क्षय करने के लिए इस शरीर को करें धारण : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
16 फरवरी, 2026

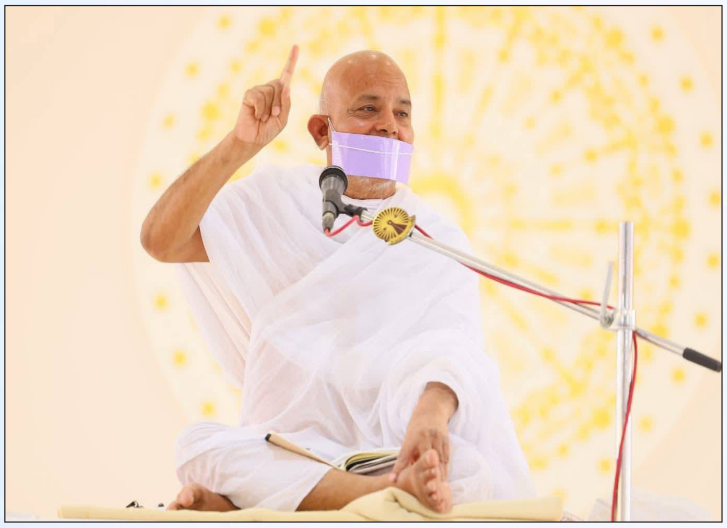

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी जैन विश्व भारती में योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में अपनी धवल सेना के साथ विराजित हैं। लगभग 37 वर्षों पश्चात् लाडनूं की पावन धरा पर आयोजित हो रहे योगक्षेम वर्ष की पृष्ठभूमि के रूप में आज से त्रिदिवसीय अनुष्ठान का उपक्रम प्रारंभ हुआ। पूज्य प्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित चारित्रात्माओं ने सर्वप्रथम सविधि वंदन किया तदुपरान्त आचार्यश्री के साथ लोगस्स आदि अनेक मंत्रों का जप हुआ।

आचार्यश्री ने समुपस्थित चारित्रात्माओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में प्रशिक्षण का कार्य संचालित होना है और इसकी जिम्मेदारियां भी निर्धारित की गई है। मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी को जैन दर्शन, अणुव्रत, जीवन विज्ञान आदि के प्रशिक्षण का जिम्मा सौंपा गया है। आचार्यश्री की आज्ञा से मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी ने इन विषयों के प्रशिक्षण से संबंधित रूपरेखा व योजना की अवगति दी। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने प्रेक्षाध्यान से संदर्भित प्रशिक्षण कार्य की जानकारी दी तथा साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने तत्त्व ज्ञान विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम योजना की प्रस्तुति दी।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वांग्मय के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में शरीर धारण करने का सर्वोत्तम कारण बताया गया है कि पूर्व कर्मों का क्षय करने के लिए इस शरीर का पोषण करना चाहिए। अर्थात् जीवन जीने का परम लक्ष्य है - मोक्ष की प्राप्ति। चारित्रात्माएं जो घर परिवार को त्याग कर संयम स्वीकार करते हैं और संयोग से विप्रमुक्त हो जाते हैं, सांसारिक संबंधों से उपरत हो जाते हैं। साधु वह है जो सांसारिक संबंधों के जाल से मुक्त हो जाता है।

साधु के मालिकाना में कोई रुपया, पैसा, जमीन, बैंक-बैलेंस इत्यादि नहीं होता है। संयोगों से मुक्त और भिक्षु के रूप में साधु रहते हैं। साधु भिक्षा जीवी होता है। कर्मों से मुक्त होने और मोक्ष प्राप्त करने के लिए साधु त्याग, तप और संयम की साधना करते हैं। संक्षेप में साधु की साधना है - पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड आराधना करना।

जीवन भर के लिए बिना विश्राम लिए इन तेरह नियमों का पालन करना साधु का धर्म होता है। ईर्या, भाषा और एषणा समितियों में विशेष सावधानी रहें। चलते समय बात न करें। (शेष पेज 9 पर)

जीवन में अनासक्ति की साधना करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
15 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वांग्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में आसक्ति और अनासक्ति की बात बताई गई है। शरीर है तो शरीर को टिकाने के लिए व्यक्ति को प्रवृत्ति भी करनी पड़ती है, पुरूषार्थ भी करना पड़ता है। प्रवृत्ति है और पदार्थों के साथ जुड़ाव है तो वहां ध्यातव्य है कि आसक्ति के अधिक या कम होने के हिसाब से व्यक्ति बंधन में आ जाता है। पूर्णतया अनासक्ति की स्थिति आ जाए तो वह बहुत बड़ी बात होती है।

कर्म बंधन में दो तत्त्वों का योगदान होता है - कषाय और योग। प्रकृति बंध और प्रदेश बंध का संबंध योग के साथ तथा स्थिति बंध और अनुभाग बंध का संबंध कषाय के साथ होता है। स्थिति लम्बी है और विपाक तीव्र है तो उसमें कषाय का योगदान होता है। व्यक्ति शरीर को चलाने के लिए कोई भी प्रवृत्ति करे तो उसमें अनासक्ति और ज्ञाता-दृष्टा भाव रखने का प्रयास करे। यदि ज्ञाता-दृष्टा भाव होगा तो पाप कर्म का बंधन या तो होगा ही नहीं और यदि होगा भी तो बहुत मंद होगा। अतः व्यक्ति जो भी प्रवृत्ति करे उसमें मोह, आसक्ति नहीं हो, अनासक्ति का भाव रहना चाहिए क्योंकि हमारे मन में जो राग और द्वेष का भाव है वह बंधन का एक बड़ा कारण बन सकता है। जिन प्राणियों के मन होता है उन्हीं के पाप कर्मों का बंध अधिक होता है, जिन प्राणियों के मन नहीं होता उनके ज्यादा पाप का बंध होता ही नहीं है।

दूसरा पक्ष यह भी है कि ज्यादा धर्म की साधना भी मन वाले प्राणी ही कर सकते हैं। मोक्ष में संज्ञी मनुष्य ही साधना करके

जा सकते हैं। अतः मन में राग द्वेष के भाव भी खूब उभर सकते हैं और मन वाले प्राणी वीतरागता को भी प्राप्त कर सकते हैं। (शेष पेज 9 पर)

भौतिक संपदा की अपेक्षा आध्यात्मिक संपदा है मूल्यवान : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
13 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन विश्व भारती लाडनूं के सुधर्मा सभा में अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में एक सूत्र दिया गया है कि थोड़े लाभ के लिए ज्यादा नुकसान नहीं उठाना चाहिए। थोड़े लाभ के कारण बहुत को छोड़ने का प्रयास करना, यह विचार मूढ़ता है।

व्यक्ति को यह ध्यान देना चाहिए कि किसी कार्य में लाभ कितना है और हानि कितनी है? जिस कार्य में थोड़ा लाभ हो और नुकसान अधिक हो, उसे करने से बचना चाहिए। जैसे कोई साधु तपस्या करता है, संयम की साधना करता है। वह सोचता है कि मेरी इस तपस्या, साधना का कोई फल मिले तो मैं अगले जन्मों में चक्रवर्ती बन जाऊं, वासुदेव बन जाऊँ। इस प्रकार का निदान कर लेता है। हो सकता है कि वह किसी जन्म में वासुदेव अथवा चक्रवर्ती बन भी जाए, परन्तु यह कितनी बड़ी मूढ़ता है कि सन्यास का, तपस्या और साधना का जीवन जो मोक्ष दिलाने वाला हो सकता है उसे भौतिक लाभ के लिए खो देना, ना समझी है। वह साधु जो व्रत और शील जिनका बहुत बड़ा फल है, उस बड़ी संपदा को एक छोटी-सी भौतिक कामना के साथ तुच्छ चीज के लिए अर्थात कौड़ी में हीरे को बेचना हो गया। यह मूढ़ता हो जाती है।

इसी प्रकार व्यक्ति के जीवन में धर्म की साधना का बहुत बड़ा फल होता है, उसके सामने भौतिक चीजे ना कुछ सी होती है। अतः धर्म की साधना को नितांत मोक्ष के लिए, आध्यात्मिक उपयोग के लिए प्रयोग किया जाए तो वह बहुत लोकोत्तर फलदायी हो जाती है। जहां भौतिकता का आकर्षण हो जाता है और तपस्या-साधना को बेच दिया जाता है, यह श्रेयस्कर बात नहीं होती है।

भौतिकता एक चीज है और आध्यात्मिकता अलग व विशेष बात होती है। साधु के मन में भौतिकता की आकांक्षा का विकास नहीं होना चाहिए। अध्यात्म बहुत ऊँची बात होती है। व्यक्ति के जीवन में शरीर की सुंदरता, कपड़े, आभूषण, आदि का थोड़ा महत्व हो सकता है, परन्तु अधिक मूल्य इस बात का है कि व्यक्ति में सद्गुण कितने हैं? संयम, तपस्या, आध्यात्मिक परोपकार की भावना कितनी है? जीवन में अहिंसा कितनी है? और चारित्र कैसा है? यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात होती है। अतः बाहर के आभूषण न भी हों तो जीवन में सद्गुण रूपी आभूषण होने चाहिए। पैसे के लोभ के कारण ईमानदारी को खो देना बहुत बड़े नुकसान की बात होती है। ज्यादा धनवान बनने के लिए ईमानदारी का नाश कर बेईमानी करना भी थोड़े के लिए ज्यादा नुकसान वाली बात हो जाती है। इसलिए व्यक्ति को अपने जीवन में आध्यात्मिक संपदा का विकास करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य प्रवर की अभ्यर्थना में साध्वी स्वर्णरेखा जी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। साध्वी विनयश्रीजी की सहवर्ती साध्वीजी तथा समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आज आचार्य प्रवर की सन्निधि में राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री जस्टिस जी.आर. मूलचंदानी उपस्थित हुए। उन्होंने पूज्य प्रवर के दर्शन कर अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्य प्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

अहिंसा, संयम, तप से जीवन को भावित कर आत्मा को बनाएं अपना मित्र : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
14 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, शांतिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वाङ्मय के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में मित्र भी होते हैं। एक व्यक्ति के अनेक मित्र भी हो सकते हैं और मित्रों के साथ वार्तालाप, हंसी मजाक, घूमना-फिरना आदि अनेक उपक्रम होते हैं, किन्तु वे मित्र पराए मित्र होते हैं। शास्त्रकार ने फरमाया है कि हे पुरुष! तुम ही तुम्हारे मित्र हो, फिर बाहर किस मित्र को खोजते हो? यह एक निश्चयनय की बात है और परम बात है।

मित्र दो प्रकार के हो सकते हैं - एक परम मित्र और दूसरा अपरम मित्र। दूसरे व्यक्ति जो मित्र बनाए जाते हैं वे अपरम मित्र की कोटि के है। परम मित्र कोई बन सकता है तो वह अपनी आत्मा ही बन सकती है। दूसरा कोई भी व्यक्ति परम मित्र की उच्च कोटि में नहीं आ सकता। आत्मा को मित्र बनाने के लिए गुणात्मक विकास आवश्यक है हमारी आत्मा यदि मित्र बन सकती है तो वह शत्रु की भूमिका भी अदा कर सकती है। शास्त्र में कहा गया है कि सुख और दुख की कर्ता और विकर्ता आत्मा ही है। आत्मा मित्र भी है और आत्मा अमित्र अर्थात् शत्रु भी है। जो आत्मा दुष्प्रवृत्ति में चली गई है वह अपनी शत्रु है। जो आत्मा सुप्रवृत्ति और अच्छे भावों में संलग्न है वह आत्मा अपनी मित्र बन जाती है। अतः आत्मा को अपना मित्र बनाने के लिए सत्कार्य करना, सद्विचार रखना, पवित्र भाव रखना, आदि उपाय हो सकते हैं। दुष्कार्य, दुष्प्रवृत्तियां, दुर्विचार, दुराचार आदि अपनी आत्मा को अपना दुश्मन बनाने वाली होती है।

जीवन में यदि अहिंसा है तो मानना चाहिए कि आत्मा कुछ सीमा तक मित्र है। यदि जीवन में हिंसात्मक भाव और प्रवृत्तियां है तो उस सीमा में आत्मा अपनी दुश्मन बन रही है। सच्चाई, ईमानदारी, संयम, संतोष, क्षमा आदि जीवन में है तो आत्मा मित्र है और झूठ-कपट, बेईमानी, असंयम क्रोध, लोभ-लालच यदि जीवन में हैं तो वह आत्मा अपनी शत्रु है। जहां व्यक्ति अध्यात्म की ओर उन्मुख हो जाता है वहां आत्मा मित्र बन जाती है और यदि बहिमुर्खता-भौतिकता में आसक्ति है तो वहां आत्मा दुश्मन बन जाती है।

हमारी पांच इन्द्रियों के पांच विषय-शब्द, रूप, गंध, रस, और स्पर्श में जो आत्मा आसक्त है, वह आत्मा अपनी दुश्मन बन जाती है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह की साधना में जो आत्मा लगी हुई है वह मित्र बन जाती है। शास्त्र में जो कहा गया है कि पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं! यह निश्चय नय और विशुद्ध आध्यात्मिक भूमिका की बात है। परन्तु व्यवहार में दूसरे मित्र भी हो सकते हैं, परन्तु वहां भी मित्र ऐसा बनाए जो कल्याण मित्र बन सके, जो आत्मा के हित में सहयोग कर सके। अतः दूसरों को मित्र बनाएं अथवा न बनाएं परन्तु स्वयं की आत्मा को अपना मित्र बनाने का प्रयास करना चाहिए। अपने जीवन को अहिंसा, संयम और तप से भावित करके आत्मा को अपनी मित्र बनाया जा सकता है। मंगल प्रवचन के पश्चात् मुनि जंबूकुमारजी (सरदारशहर), मुनि देवेन्द्रकुमारजी, मुनि आर्जवकुमारजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

संस्कार और प्रज्ञा का संगम : ज्ञानशाला वार्षिक सम्मेलन

अणुव्रत भवन, दिल्ली।

ज्ञानशाला का वार्षिक सम्मेलन केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि नई पीढ़ी की चेतना को संस्कारित करने का एक उत्सव रहा। शासनश्री मुनि विमलकुमार जी एवं मुनि उदितकुमार जी के पावन सान्निध्य में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मुनि विमलकुमार जी ने कहा कि ज्ञानशाला उर्वरा भूमि है। ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमार जी ने शिक्षा के मर्म को विस्तार देते हुए कहा- आज मस्तिष्क की प्रखरता से अधिक हृदय की सुचिता की आवश्यकता है। सच्चा ज्ञान वही है जो व्यक्ति को आत्म-अनुशासन और संयम से साक्षात्कार कराए।

ज्ञानशाला का ध्येय बालक को केवल सफल बनाना नहीं, बल्कि उसे जीवन के शाश्वत मूल्यों से जोड़ना है। अभिव्यक्ति और अनुभव- कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण तेरापंथ सभा दिल्ली की 13 ज्ञानशालाओं के बच्चों की प्रस्तुतियां रहीं, जिनमें कला और संस्कारों का अद्भुत सामंजस्य दिखा। एक विशेष पॉडकास्ट सत्र में राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने अपने 28 वर्षों के अनुभवों का निचोड़ साझा करते हुए बाल पीढ़ी को सकारात्मक दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दी।

कृतज्ञता और सम्मान- इस अवसर पर ज्ञानशाला दिल्ली के संयोजक महिम बोथरा, तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुमन नाहटा, जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ एवं अन्य पदाधिकारियों ने अपने विचार रखे।

अंतिम सत्र में उन प्रशिक्षिकाओं और ज्ञानार्थियों को सम्मानित किया गया। जिन्होंने पूरे वर्ष निष्ठा और अनुशासन का परिचय दिया। कार्यक्रम का पहला चरण ज्ञानशाला की दो ज्ञानार्थी आलाया और उदिता एवं द्वितीय चरण अशोक सेठिया के सुव्यवस्थित संचालन और श्वेता हीरावत के आभार ज्ञापन के साथ यह सम्मेलन गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

भिक्षु साधना केन्द्र में संतों का आध्यात्मिक मिलन

जयपुर। श्याम नगर स्थित भिक्षु साधना केन्द्र में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के संतों का आध्यात्मिक मिलन हुआ। जयपुर में प्रवासित मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' एवं मुनि संभव कुमार जी का इंदौर (मध्यप्रदेश) चातुर्मास करके आए संत अर्हत कुमार जी सहवर्ती संत भरत कुमार जी, मुनि जयदीप जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ। समागत संतों के स्वागत में कार्यक्रम समायोजित हुआ। जिसमें संतों ने परस्पर प्रमोद भावना व्यक्त की। इस अवसर पर महिला समाज की ओर से सीमा नवलखा श्रावक समाज से अमृत लाल बैद, संदीप भंडारी आदि ने संतों के स्वागत में अपनी भावनाएं व्यक्त की।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

तोशाम।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा एवं राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अंतर्गत तोशाम ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। ज्ञानार्थी देवांश जियांश नैतिक व हार्दिक ने सामूहिक रूप से वर्णमाला गीत सुनाया। ज्ञानशाला के बच्चों ने 'सपनों को सच करें गुरुवर ज्ञानशाला में' गीत की सामूहिक रूप से प्रस्तुति दी। उपासिका मंजू जैन ने 'संघ हमारा प्राण है' गीत से प्रारंभ करते हुए कहानी के माध्यम से ज्ञानशाला के महत्व को बताया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने 'प्यारे बच्चों तुम ज्ञानशाला आओ' गीत का सुमधुर संगान किया। ज्ञानार्थी युक्ति, कुनाल, नैतिक हार्दिक, गरिमा, खुशी व भूमि ने कविता, कहानी, लोगस्स पाठ, ज्ञानशाला प्रतिज्ञा,नमस्कार मुद्रा व तेरापंथ की मौलिक मर्यादाओं के माध्यम से पृथक-पृथक अभिव्यक्ति दी। ज्ञानार्थी गरिमा, खुशी, भूमि, लक्षित व अंश ने लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने ज्ञानार्थी वार्षिक परीक्षा का रिजल्ट सुनाया एवं ज्ञानशाला की सभी गतिविधियों की जानकारी देते हुए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। आशु कवि पंकज जैन ने स्वरचित मुक्तकों के माध्यम से स्थानीय ज्ञानशाला की विशेषताओं का वर्णन किया। तेरापंथ सभा के मंत्री शंकर जैन, शिक्षक पंकज जैन ज्ञानशाला संयोजक नीरज जैन ने ज्ञानार्थियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए। ज्ञानशाला संयोजक नीरज जैन ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका ज्योति जैन ने किया।

वॉकथोन 2026 का आयोजन

नागपुर। टीपीएफ द्वारा स्थानीय सदस्यों को सुबह की सैर तथा चाइल्ड एजुकेशन के प्रति जागरूक करने लिए वॉकथोन 2026 का आयोजन किया गया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष राहुल कोठारी ने SHINE एवं आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के बारे में जानकारी दी। तत्पश्चात सैर करने वालों का काफिला तेरापंथ भवन से पैदल मार्च करते हुए करीब 3 किलोमीटर वॉकथोन करके अंबेडकर गार्डन पहुंचा और वापस तेरापंथ भवन में आकर समापन हुआ। कुल 65प्रतिभागियो ने वॉकथोन पूर्ण किया। अंबेडकर गार्डन पहुंचने पर मधु रावल द्वारा फिटनेस सेशन लिया गया। संयोजक मधु डागा व उनकी टीम के प्रयासो से प्रोग्राम संपन्न हुआ। आभार ज्ञापन टीपीएफ मंत्री विवेक पारख ने किया।

कैसे बने स्वयं के ट्रस्टी कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर के द्वारा कैसे बने स्वयं के ट्रस्टी व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन साध्वी विशदप्रज्ञा जी, साध्वी लब्धियशा जी के सानिध्य में शांतिनिकेतन गंगाशहर में किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वियों के द्वारा गीत के माध्यम से किया गया, तत्पश्चात विषय के प्रशिक्षक के रूप में साध्वी श्री विधि प्रभा जी ने विषय को सरल और सुलभ भाषा में आम जन को समझाया। उन्होंने व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं को छूते हुए बताया कि कैसे व्यक्ति अपने सोशल, मेंटल और स्पिरिचुअल पर्सनेलिटी को विकसित कर सकता है उन्होंने यह बताया कि व्यक्तित्व महंगे कपड़ों और आभूषणों का मोहताज नहीं है। साध्वी लब्धि यशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह विषय इतना गहन है कि इस पर एक कार्यशाला से नहीं होगा, तेरापंथ युवक परिषद को आगे भी इस तरह की अनेक कार्यशालाएं लगानी होगी। साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने तेरापंथ युवक परिषद की प्रशंसा करते हुए कहा कि गंगाशहर युवक परिषद के हर कार्यकर्ता में एक अनूठा जोश है, कार्यक्रम को करने का जज्बा है। उन्होंने बताया कि व्यक्तित्व विकास, बोलने की कला आदि के माध्यम से हर व्यक्ति अपना चौमुखी विकास कर सकता है। कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव में तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर के अध्यक्ष ललित राखेचा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन उपाध्यक्ष देवेंद्र डागा ने किया। व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के प्रभारी मयंक सेठिया ने बताया कि इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन समाज की प्रतिभाओं को विकसित कर आगे बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाता है।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का हुआ भव्य आयोजन

लिलुआ।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन लिलुआ श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा संगम हॉल में किया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे। संभागियों की संख्या 86 थी। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - जिनशासन का एक धार्मिक संगठन है- तेरापंथ, तेरापंथ तेजस्वी, यशस्वी, मनस्वी शासन है। उसकी तेजस्विता का मूल आधार है।

आचार्य भिक्षु इस संगठन के आधप्रवर्तक थे। वे अपने युग के विलक्षण विचक्षण, विशिष्ठ, विवेक संपन्न थे। वे युगदृष्टा युगसृष्टा युगपुरुष थे। वे जमाने के थपोड़ों से घबराए नहीं उन्हें सत्य का प्रकाश मिला, तब उन्होंने निर्भीक होकर उस जमाने की स्थितियों पर खुलकर सैद्धान्तिक विश्लेषण किया। वे कांतिकारी आचार्य के रूप में पहचाने गए। उन्होंने धर्म क्रांति की वह तेरापंथ के रूप में विख्यात हुई। वे 18वीं सदी के एक प्रखर जैनाचार्य महानदार्शनिक तत्त्ववेत्ता व जिनवाणी पर गहरी आस्था रखने वाले महापुरुष थे। उन्होंने जर्म की जैसी सटीक और सरल भाषा में जो व्याख्या की वह अन्यत्र दुर्लभ है।

मुनि ने आगे कहा- आचार्य भिक्षु ने साधन और साध्य शुद्धि पर बल दिया। त्याग धर्म भोग अधर्म, व्रत धर्म अव्रत अधर्म है, अर्हत आज्ञा धर्म व अनाज्ञा अधर्म है हृदय परिवर्तन धर्म है ,बल प्रयोग धर्म नहीं है अहिंसा धर्म है हिंसा अधर्म नै जैसी धर्म की कसौटियां बताकर भव्य जीवों पर बड़ा उपकार किया है। मुनि ने आगे कहा दान दया का सबंध लौकिक व आध्यात्मिक दोनों के साथ है। जहां आत्म रक्षा की बात है वहां आध्यात्मिक दया है जहां प्रणरक्षा की बात है वहाँ लौकिक दया है। मुनि ने आगे का प्रत्येक श्रावक को तेरापंथ के दर्शन को समझना जरूरी है ।समझे बिना तेरापंथ मेरापंथ हो नहीं सकता। समर्पण विनयशीलता, सहनशीलता हर परिस्थिति में संतुलित रहने से व्यक्ति तेरापंथ को मेरापंथ बना सकता है।

उपासक सुशील बाफना व सभी श्रावक श्राविकाओं के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण लिलुआ सभा के अध्यक्ष अनिल जैन ने दिया। कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक उपासक सुशील जी बाफना ने उद्घाटन सत्र में कार्यशाला की भूमिका को स्पष्ट किया। इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष महेन्द्रजी नाहटा मुख्य न्यासी सुरेशजी गोयल व महामंत्री विनोद बैद ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। इस अवसर महासभा के नवगठित कार्यकारिणी मुनि दर्शनार्थ विशेष रूप से उपास्थित हुई।

लिलुआ सभा द्वारा अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यकत्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
23 फरवरी - 01 मार्च 2026

संक्षिप्त खबर

2027-28 प्रवास हेतु केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन

दिल्ली। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के 2027-28 के प्रवास हेतु गठित प्रवास व्यवस्था समिति के केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन रविवार 15 फरवरी 2026 को शासनश्री मुनि विमल कुमारजी, बहुश्रुत मुनि उदित कुमारजी, डा० मुनि अभिजित कुमार जी आदि 9 संतों के सान्निध्य और मंगलपाठ श्रवण के पश्चात प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैयालाल जैन पटावरी के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर महासभा अध्यक्ष महेन्द्र नाहटा, प्रधान ट्रस्टी सुरेश गोयल, प्रवास समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बजरंग बोथरा व महामंत्री सुखराज सेठिया की भी सहभागिता रही। कार्यक्रम में महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड, प्रवास समिति उपाध्यक्ष राजकुमार नाहटा, दिल्ली सभा महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, उपाध्यक्ष विमल बैगानी व बाबूलाल दुगड मंत्री विकास बोथरा,कार्यालय मंत्री कविता बरडिया सहित अनेक पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की गरिमामय उपस्थिति रही।

जप अभ्यर्थना 2.0 के माध्यम से अखंड जप का आयोजन

राजाजीनगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर ने जप अभ्यर्थना 2.0 का कार्यक्रम आयोजित किया। महायज्ञ में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनिश्री डॉ पुलकितकुमारजी ठाणा - 2 का सानिध्य प्राप्त हुआ जिनकी प्रेरणा से जाप सफलतम पूर्वक संपन्न हुआ। मुनिश्री ने अपनी प्रेरणादायक वाणी द्वारा यह जानकारी दी कि अभातेयुप द्वारा इस कार्य से युवाओं को अध्यात्म की धारा से जोड़ने के लिए तप व जप के माध्यम से अच्छा प्रयास किया जा रहा है। स्थानीय श्रावक-श्राविका समाज ने आराध्य के प्रति अभ्यर्थना व्यक्त करते हुए जप सहित सामायिक में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। सभा परिवार, महिला मण्डल परिवार का भी जप में विशेष सहयोग रहा।अखण्ड जप में कुल 175 सदस्यों ने भाग लिया।

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

इचलकरंजी। आचार्य श्री महाश्रमणजी के विद्वान सुशिष्य डॉ. मुनि आलोक कुमारजी एवं सहवर्ति मुनि हेमकुमार जी के सानिध्य में तेरापंथ युवक परिषद इचलकरंजी द्वारा आयोजित आध्यात्मिक फीफा चैंपियनशिप ज्ञानशाला के बच्चों के लिए एवं आध्यात्मिक क्रिकेट प्रतियोगिता श्रावक श्राविका के लिए मुनिश्री जी के सानिध्य में एक नए आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरो के साथ संपन्नता हुई। इस प्रतियोगिता में बच्चों, श्रावक समाज ने बहुत ही उत्साह पूर्वक प्रतियोगिता में भाग लिया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने प्रतियोगिता में संभागियों को शुभेच्छा दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री अंकुश बाफना ने किया साथ ही प्रतियोगिता में संभागियों का एवं श्रावक श्राविकाओं का आभार ज्ञापन किया।

भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन

श्रीडूंगरगढ़। तेरापंथ युवक परिषद् श्रीडूंगरगढ़ के द्वारा मालू भवन में विशाल एवं भव्य भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक वातावरण के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल पाठ के साथ हुआ। इस अवसर पर साध्वी संगीतश्रीजी एवं साध्वी डॉ. परमप्रभाजी जी के सानिध्य में भिक्षु नाम के महत्व, उनके आदर्शों तथा धम्म जागरण के भावों पर प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किए गए। समस्त जनसमुदाय का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

महासभा के अध्यक्ष व प्रधान न्यासी का अभिनंदन

नई दिल्ली।

राजधानी के अणुव्रत भवन में उस समय श्रद्धा, विश्वास और वंदना के स्वर एक साथ गूंज उठे, जब संस्था शिरोमणि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के नवगठित ट्रस्ट बोर्ड के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल एवं महेंद्र नाहटा के अध्यक्ष मनोनीत होने के उपलक्ष्य में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली एवं आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान एवं परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण के शिष्य 'शासनश्री' मुनि विमलकुमार जी एवं 'बहुश्रुत' मुनि उदितकुमार जी का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। शासनश्री मुनि विमलकुमार जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि किसी भी संस्था की वास्तविक शक्ति उसके पदाधिकारी होते हैं। पद केवल दायित्व का प्रतीक है, किंतु उसे सार्थक बनाती है-विनम्रता, संगठन निष्ठा और दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य महाश्रमण जी के नेतृत्व में संचालित संस्थाओं में इन गुणों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। बहुश्रुत मुनि उदितकुमार जी ने कहा कि जिस संगठन के कार्यकर्ताओं में धार्मिकता के साथ सामाजिकता-संवेदनशीलता का भाव होता है, उसका इतिहास स्वतः स्वर्णिम बन जाता है। उन्होंने कहा कि सुरेश गोयल और महेंद्र नाहटा में इन दोनों गुणों का सशक्त समावेश है। उनकी संघनिष्ठा, सेवा-भाव और समर्पण की साधना उन्हें इस दायित्व तक लाई है। उन्होंने कामना की कि उनका नेतृत्व महासभा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगा।

मुनि अभिजीतकुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए नव नेतृत्व को कर्तृत्वशील एवं संवेदनशील बनने की प्रेरणा दी। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैयालाल पटावरी जैन ने दोनों महानुभावों का अभिनंदन करते हुए कहा कि उनकी सुदीर्घ सेवाएं, विनम्र व्यवहार और संघ के प्रति अटूट निष्ठा ही उनके चयन का आधार बनी है। यह केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि दिल्ली समाज के लिए गौरव का क्षण है।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा कि दोनों विभूतियां उदारता और दानशीलता की सजीव प्रतिमूर्ति हैं। समाजहित और संघकार्य के प्रति उनका समर्पण सदैव प्रेरक रहा है। प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बजरंग बोथरा ने कहा कि दोनों ही महान विभूतियां महासभा के इतिहास में नया अध्याय लिखेंगी। इस बार महासभा में बड़ी संख्या में दिल्ली का प्रतिनिधित्व होना हम सबके लिए विशेष प्रसन्नता और गर्व का विषय है।

उन्होंने कहा कि यह अवसर केवल अभिनंदन का नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व के नए संकल्प का भी है। महेंद्र नाहटा ने गहन श्रद्धा के साथ गुरु के प्रति समर्पण भाव व्यक्त करते हुए कहा कि किसी भी व्यक्ति की सफलता का वास्तविक आधार गुरु कृपा ही होती है। हमारी सभी संस्थाओं की आत्मा भी गुरु हैं, उनकी दृष्टि, उनका मार्गदर्शन और उनका आशीर्वाद ही हमें दिशा देता है। वहीं सुरेश गोयल ने अपने विचारों में महासभा के गौरवपूर्ण इतिहास का स्मरण कराते हुए बताया कि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा की स्थापना आचार्य श्री कालूगणी के शासनकाल में हुई थी और यह तेरापंथ धर्मसंघ की सबसे प्राचीन संस्था है, जिसने 113 वर्ष की प्रेरक यात्रा पूर्ण की है। कार्यक्रम का कुशल संयोजन दिल्ली सभा के महामंत्री श्री प्रमोद घोड़ावत ने अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से किया। अभिनंदन करने वाली संस्थाओं में तेरापंथ परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति ट्रस्ट, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास सहित अनेक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

हिंदू समाजोत्सव का विशेष कार्यक्रम आयोजित

बेंगलुरू।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चामराजपेट द्वारा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष मे श्री सिद्ध मठ आश्रम के सामने हिंदू समाजोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

जिसमें युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान शिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ने कहा भारतीय संस्कृति में कृषि और ऋषि दोनों का बहुत सम्मान है। कृषि से जीवन चलता है तो ऋषि मुनि समाज को मार्गदर्शन देने का कार्य करते हैं,भटके हुए को सही मार्ग पर लाते हैं। भारत की अखंडता के लिए ऋषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा था, है और आगे भी रहेगा। जैन समाज के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित मुनिश्री पुलकित कुमारजी ने आगे कहा जैन समाज सदैव भारत की एकता व अखंडता के लिए तत्पर रहा है जैन धर्म ने भाषा और जाति के आधार पर कभी विभाजन नहीं होने दिया। भारत की एकता को बनाए रखना आज की परम आवश्यकता हो गई है , विभाजनकारी प्रवृत्ति को दूर रखा जाए यही वर्तमानसमय की जरूरत है। मुनि परम यशविजयजी ने कहा भारत माता का वही सपूत कहलाता है जिसने आत्म सनातन धर्म तत्व को पहचाना है। सनातन का मतलब है - शाश्वत आत्मगुणों का विकास ही हमारा सनातन धर्म होना चाहिए।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का भव्य आयोजन

लिलुआ।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा–3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद् लिलुआ द्वारा कार्यकर्ता प्रशिक्षण लिलुआ तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने गीतिका का संगान कर सभी को मोहित किया। कार्यक्रम में मुनिश्री जी ने युवाओं को प्रेरणा देते हुए कार्यकताओं के उपयोगिता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक मजबूत संगठन के निर्माण हेतु सक्षम कार्यकर्ता नींव के पत्थर के समान होता है।

मुनिश्री जी ने सफल कार्यकर्ता के गुणों के बारे बताया। त्याग,शील,नैतिक आचरण, सहनशीलता, सरलता, सहजता, उदारता इन सभी गुणों से ही एक अच्छा कार्यकर्ता तैयार होता है। कार्यक्रम में परिषद अध्यक्ष अमित नाहटा ने स्वागत वक्तव्य से सभी का अभिनंदन किया और मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की उन्होंने तेयुप लिलुआ को ये कार्यक्रम आयोजित करने का अवसर प्रदान किया। तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्य सिद्धांत बागरेचा ने मंच संचालन कर कार्यक्रम को सुचारू रूप से संचालित किया। परिषद् के संगठन मंत्री संयम सेठिया ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर जांच शिविर का आयोजन

गोरेगांव, मुंबई। अ.भा.ते.म.म.के तत्वाधान में गोरेगांव महिला मंडल के द्वारा आयोजित आरोग्यम कार्यशाला के अन्तर्गत वर्ल्ड कैंसर डे पर पेप स्मीयर कैंसर टेस्ट आयोजित किया गया। स्वागत वक्तव्य एवं प्रोजेक्ट से जुड़ी विस्तृत जानकारी महिला मंडल अध्यक्षा डिंपल हिरण एवं मंत्री कल्पना चोरडिया द्वारा दी गई। यह स्क्रीन टेस्ट कैम्प सौरभ मेडिकल हैल्थ केयर हॉस्पिटल के ट्रस्टी अशोक शाह डॉ आनंद आंदे डॉ साइली वानखेड़कर डॉ बिंदु सुधीर की पूर्ण देखरेख में गोरेगांव महिला मंडल द्वारा निः शुल्क आयोजित किया गया। इस जाँच में गोरेगांव कि अन्य संस्था कि स्थानीय बहनों ने भी जाँच कराई। महिला मण्डल द्वारा 82 बहिनों की निःशुल्क जाँच कराई गई। कार्यक्रम में सभा से मंत्री सुरेश ओस्तवाल, कोषाध्यक्ष पारस सांखला, एवं समस्त तेरापंथ समाज और महिला मण्डल की बहिने उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन कांता सिसोदिया द्वारा किया गया।

वॉकथान 2026 सफल आयोजन

मरुधरा। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, मरुधरा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर का एक कदम शिक्षा की ओर– वॉकथान 2026 सुधर्मा सभा,जैन विश्व भारती से शुरू होकर चौथी पत्ती होते हुए मंगलम हॉस्पिटल मार्ग से पहली पत्ती जैन विश्व भारती गेट से महाश्रमण विहार, प्रज्ञा निलियम होते हुए सम्मपोषनम में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। देश के 100+ शहरों के साथ मरुधरा ने भी उत्साह, ऊर्जा एवं सामाजिक प्रतिबद्धता का उत्कृष्ट परिचय प्रस्तुत किया। प्रातः 7.15 बजे आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा मंगलपाठ सुनकर रैली प्रारंभ हुई। TPF पर्यवेक्षक मुनि रजनीश कुमार जी द्वारा प्रेरणा पाथेय प्रदान किया गया। इस वॉकाथॉन में सभी आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा शिक्षा के इस महाअभियान को सशक्त समर्थन प्रदान किया। यह आयोजन केवल एक वॉक नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, समाजसेवा एवं प्रोफेशनल एकता का सुंदर संगम रहा। कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमण योगषेम वर्ष प्रवास व्यस्था समिति अध्यक्ष प्रमोद बेद, उपाध्यक्ष उम्मेद बोकाडिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष समित मोदी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल बेद, मंत्री राज कोचर, महिला मंडल सहमंत्री रेणु कोचर आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

जसोल। महावीर इंटरनेशनल वर्धमान बालोतरा, तेरापंथ सभा, तेरापन्थ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल एवं अणुव्रत समिति जसोल के सयुक्त तत्वावधान में विश्वस्तरीय थायरोकेयर लेब मुम्बई द्वारा विशाल दो दिवसीय संपूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन स्थानीय पुराणा ओसवाल भवन जसोल में आयोजित हुआ। शिविर सयोंजक कान्तिलाल ढ़ेलडिया, प्रवीण भंसाली एवं तरुण भंसाली ने बताया कि जांच रिपोर्ट हेल्थ ऐक्सफर्ड द्वारा विशेष जांचे की गई। इस दो दिवसीय शिविर में कुल 38 मरीजों की संपूर्ण जांच की गई। जिसमें विटामिन, हार्ट, कॉलेस्ट्रॉल, लिवर, किडनी, शुगर, खुन की कमी, जोडो में दर्द सम्बंधित विभिन्न तरह की महत्वपूर्ण जांचे की गई। इस शिविर को सफल बनाने में संस्थापक पवन नाहटा, सरंक्षक डॉ. जी.सी. वडेरा, क्लब अध्यक्ष अशोक चौपड़ा तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी सहित सदस्यो ने सेवाएं दी।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।
— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **गोरेगांव, मुंबई।** जोधपुर निवासी गोरेगांव प्रवासी अर्चना प्रशांत दुगड़ का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक प्रभारी गौतम ओस्तवाल एवं सभा अध्यक्ष एवं जैन संस्कारक अशोक चौधरी सम्पन्न ने संपादित करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **उदयपुर।** दीपिका और संजय मारू के सुपुत्र वत्सल मारू के नवीन ऑफिस का भूपालपुरा में शुभारंभ कराया। कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कारक पंकज भंडारी द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुई। चैत्य पुरुष जग जाए, 9 मंगल भावना आदि विधि विधान में निर्दिष्ट मंत्रोच्चार के साथ ऑफिस का शुभारंभ किया गया।

■ **सूरत।** चूरू निवासी सूरत प्रवासी अशोक कोठारी के सुपुत्र श्रेयांश कोठारी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक नरेन्द्र भंसाली ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नामकरण संस्कार

■ **खारुपेटिया।** सरदारशहर निवासी खारुपेटिया प्रवासी स्वर्गीय चंदनमल-इलायची देवी बोथरा के सुपौत्र एवं अजित-कल्पना बोथरा के सुपुत्र रिषभ-अंकिता बोथरा के सुपुत्र का रिशांक नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल बेंगाणी (बरपेटा रोड) एवं दीपक हिरावत ने मंगलभावना यंत्र की विधिवत स्थापना एवम् पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से नामकरण संस्कार संपादित करवाया।

■ **सूरत।** लाडनूं निवासी सूरत प्रवासी महेंद्र कुमार कोठारी के पुत्र-पुत्रवधू मोहित निकिता जी कोठारी के प्रांगण में कन्या रत्न का जन्म हुआ जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतम वेदमूथा, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

पाणिग्रहन संस्कार

■ **सूरत।** देशनोख निवासी सूरत प्रवासी सरला देवी पारख के सुपुत्र गणेश पारख का शुभ पाणिग्रहण संस्कार गंगाशहर निवासी महेंद्र कुमार लक्ष्मी देवी आंचलिया की सुपुत्री समता आंचलिया के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन बुचा, मनीष कुमार मालू, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

जैन धर्म का सबसे पुराना नाम निग्रन्थ धर्म

गंगाशहर।

तेरापंथी सभा, गंगाशहर की और से आयोजित कार्यक्रम में साध्वी श्री विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि जिन शासन का स्तंभ चार खम्भों पर निर्भर है,चार तीर्थ पर टिका हुआ है।

साधु - साध्वी, श्रावक -श्राविका। जैन धर्म का सबसे पुराना नाम निग्रन्थ धर्म, श्रमण धर्म के नाम से प्रसिद्ध था। आज लोग इसे जैन धर्म के नाम से पहचानते हैं। जैन धर्म का मुख्य लक्ष्य है आत्मा को वीतरागता की दिशा में ले जाना । राग और द्वेष को कम करना । और साधु संत त्याग तपस्या के माध्यम से अपने जीवन में संयम साधना के द्वारा आत्मा के कर्मों को कम करते-करते वीतरागता कि दिशा में आगे बढ़ते हैं। जैन धर्म के अनुयायियों को श्रमोपासक के नाम से भी जाना जाता है । साधु साध्वियों को शुद्ध साधुपन की पालन के लिए पांच निश्रा (आधार) बताई गई है। नंबर वन राजा ,राजा की आज्ञा शासन की आज्ञा 2.गाथापति यानी श्रावक समाज के निश्रा 3.संघ की निश्रा 4.षठजीव काय, की निश्रा एवं 5.शरीर इन सब चीज के सहयोग से ही साधना की जा सकती। साधना की दृष्टि से भी चार प्रकार के साधु होते हैं। स्थविर, जिनकल्पी, प्रतिमाधारी ,अप्रमत साधु साध्वी श्री जी ने इन सब का विस्तार से विवेचन किया। साध्वी श्री ने श्रावकों की तुलना माता पिता, भाई, मित्र से करते हुए अनेक उदाहरणों से बताया कि किस प्रकार जागरूक श्रावक अपना दायित्व निभाता है।

प्रतिभाशाली ज्ञानार्थियों को किया गया सम्मानित

टी दासरहल्ली।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के मंगल सानिध्य में टी दासरहल्ली बैंगलोर द्वारा ज्ञानशाला की ज्ञानार्थियों को शिशु संस्कार बोध भाग 1 से 5 तक वर्ष 2025 परीक्षा में 90% से ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किया गया। डॉ मुनि पुलकित कुमारजी ने ज्ञानार्थियों को आशीर्वाद दिया तथा उपस्थित श्रावक समाज को ज्ञानशाला में बच्चों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में भेजने का आवाहन किया। ज्ञानार्थियों को डिंपल चावत की तरफ से पुरस्कार दिया गया इस कड़ी में शिशु संस्कार बोध भाग 1 में प्रथम स्थान चहक कोठारी ने 96%, भाग 2 में सम्यक जैन ने 99%, भाग 3 में तन्मय चावत ने 99%, भाग 5 में अनाया बाबेल ने 93% तथा तानिया जैन ने 91% अंक प्राप्त करने पर जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ की तरफ से भेजे गए प्रमाण पत्र दिये गये। इस अवसर पर टी दासरहल्ली ज्ञानशाला संयोजिका गीता बाबेल तथा प्रशिक्षिका डिंपल चावत नम्रता पितलिया दीपिका गांधी के साथ रोहित कोठारी,दिनेश मरोठी, राकेश पोकरणा आदि उपस्थित थे।

संबोधि

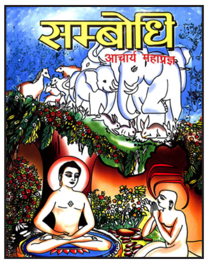

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

महावीर ने कहा-'बीअं तं न समायरे' दुबारा वैसा आचरण नहीं करे।' दुबारा भूल करने का अर्थ है-आप स्वयं में जागृत नहीं हैं। संकल्प को लेकर एक बार तोड़ देने पर मन दुर्बल हो जाता है। संकल्प के प्रति आस्था क्षीण हो जाती है। अनेक व्यक्ति संकल्प के टूट जाने पर पश्चात्ताप कर संतोष की सांस ले लेते हैं और बहुतों के मन से पश्चात्ताप का भाव भी चला जाता है। किन्तु उन्हें यह याद रखना चाहिए कि पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त में महान् अन्तर है। पश्चात्ताप क्षणिक शुद्धि है और प्रायश्चित्त सर्वांदिक। पश्चात्ताप करने वाला मनःशुद्धि नहीं करता। वह सोचता है-मैं गलत नहीं हूं, मेरे से गलती हो गई। जिसे स्वयं के गलत होने का विश्वास है, वह अपनी भूल सुधार सकता है। भूल का वास्तविक प्रतिकार है-स्वयं को जैसा है वैसा स्वीकार करना। प्रायश्चित्त कर लेने पर भी अनेक व्यक्तियों के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं होता। इसका मूल कारण यही है कि उन्होंने अपनी यथावत् स्थिति का स्वीकरण नहीं किया। केवल भय, प्रलोभन आदि अन्य कारणों से प्रायश्चित्त किया था। प्रायश्चित्त है-स्वयं का स्पष्ट दर्शन और फिर उस दोष-पथ का अस्वीकरण। जो अपने को देखता है वह भूलों का परिमार्जन कर निश्चित ध्येय को प्राप्त कर सकता है और जो अपने को सही मानता है, कार्य में भूल देखता है वह पश्चात्ताप कर स्वयं को पवित्र समझ लेता है। प्रायश्चित्त है अंतर-शोधन। प्रायश्चित्त व्यक्ति को बदलता है, पश्चात्ताप नहीं। महावीर आंतरिक तप की बात कर रहे हैं। इसमें पश्चात्ताप से काम नहीं चलता। स्वयं को देखना और रूपान्तरित करना है। 'पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं' पुरुष । तू ही अपना मित्र है। स्वयं को बदल लेने पर पुरुष अपना मित्र हो जाता है और स्वयं को न बदलने पर शत्रु। भीतर में प्रयाण करने के लिए प्रायश्चित्त का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

(२) विनय

'माणो विणयनासणो'। 'माणं मद्दवया जिणे'– अहंकार विनय का नाशक है। अहंकार को मृदु बनकर जीतो। इससे स्पष्ट प्रतिध्वनित होता है कि विनय और अहंकार में कहीं तालमेल नहीं है। दोनों की दो दिशाएं हैं। विनय अहंकार-शून्यता है। अहंकार की उपस्थिति में विनय सिर्फ औपचारिक होता है। बायजीद नामक सूफी संत के पास एक व्यक्ति आया, झुका और बोला-कुछ प्रश्न हैं। बायजीद ने कहा- 'पहले तुम झुको तो सही'। वह बोला-आप क्या कहते हैं? क्या आपने नहीं देखा, मैंने आते ही सबसे पहले झुककर आपको नमस्कार किया था? बायजीद हंसा और बोला-'मैं शरीर को झुकाने की बात नहीं कहता। मैं पूछता हूं, तुम्हारा अहंकार झुका या नहीं? उसे झुकाओ। ऐसा ही प्रसंग बुद्ध के जीवन का है। एक धनी आदमी बहुमूल्य उपहार लेकर आ रहा था। सोचा बुद्ध स्वीकार करें या नहीं, इसलिए एक सुन्दर खिला हुआ पुष्प भी साथ ले लिया। वह उसे बुद्ध के चरणों में चढ़ाने लगा तो बुद्ध ने कहा- गिरा दो इसे। उसने वह कीमती उपहार नीचे गिरा दिया। अब फूल समर्पित करने लगा, तब भी बुद्ध बोले- गिरा दो इसे। उसे भी गिरा दिया। वह अवाक् देखता रह गया। बुद्ध फिर उसी क्षण बोले। इसे भी गिरा दो। वह बोला-भगवान। अब कुछ नहीं है मेरे हाथ में। बुद्ध ने मन्द मुस्कान के साथ कहा-भले आदमी ! मैंने कब इन्हें गिराने के लिए कहा ? मेरा संकेत था, अहंकार की ओर। तू धनी है। धन का अहं जो बोल रहा था, उसे गिराने की बात है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

सह-अस्तित्व और सापेक्षता

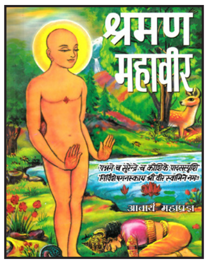

१. एक बार गौतम ने पूछा- 'भंते! कुछ साधक कहते हैं कि साधना अरण्य में ही हो सकती है। इस विषय में आपका क्या मत है?'

'गौतम ! मैं यह प्रतिपादन करता हूं कि साधना गांव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है। साधना गांव में भी नहीं होती और अरण्य में भी नहीं होती।'

'भंते! यह कैसे ?'

'गौतम ! जो आत्मा और शरीर के भेद को जानता है, वह गांव में भी साधना कर सकता है और अरण्य में भी कर सकता है। जो आत्मा और शरीर के भेद को नहीं जानता वह गांव में भी साधना नहीं कर सकता और अरण्य में भी नहीं कर सकता।'

जो साधक आत्मा को नहीं देखता, उसकी दृष्टि में ग्राम और अरण्य का प्रश्न मुख्य होता है। जो आत्मा को देखता है, उसका निवास आत्मा में ही होता है। इसलिए उसके सामने ग्राम और अरण्य का प्रश्न उपस्थित नहीं होता। यह तर्क उचित है कि यदि तुम आत्मा को देखते हो तो अरण्य में जाकर क्या करोगे? यदि तुम आत्मा को नहीं देखते हो तो अरण्य में जाकर क्या करोगे?

२. सोमिल जाति से ब्राह्मण था, वैदिक धर्म का अनुयायी और वेदों का पारगामी विद्वान् । वह वाणिज्यग्राम में रहता था। भगवान वाणिज्यग्राम में आए। द्विपलाश चैत्य में ठहरे। सोमिल भगवान के पास आया। उसने अभिवादन कर पूछा- 'भंते! आप एक हैं या दो?'

'मैं एक भी हूं और दो भी हूं।'

'भंते! यह कैसे हो सकता है?'

'मैं चेतन द्रव्य की अपेक्षा से एक हूं तथा ज्ञान और दर्शन की अपेक्षा से दो हूं।'

'भंते ! आप शाश्वत हैं या गतिशील?'

'कालातीत चेतना की अपेक्षा मैं शाश्वत हूं, और त्रिकाल-चेतना की अपेक्षा मैं गतिशील हूं-जो भूत में था, वह वर्तमान में नहीं हूं और जो वर्तमान में हूं, वह भविष्य में नहीं होऊंगा।

३. भगवान कौशाम्बी के चन्द्रावतरण चैत्य में विहार कर रहे थे। महाराज शतानीक की बहन जयन्ती वहां आई। उसने वंदना कर पूछा-

'भंते! सोना अच्छा है या जागना अच्छा है।'

'कुछ जीवों का सोना अच्छा है और कुछ जीवों का जागना अच्छा है।'

'भंते! ये दोनों कैसे?'

'अधार्मिक मनुष्य का सोना अच्छा है। वह जागकर दूसरों को सुला देता है, इसलिए उसका सोना अच्छा है।'

'धार्मिक मनुष्य का जागना अच्छा है। वह जागकर दूसरों को जगा देता है, इसलिए उसका जागना अच्छा है।'

'भंते! जीवों का दुर्बल होना अच्छा है या सबल होना?'

'कुछ जीवों का दुर्बल होना अच्छा है और कुछ जीवों का सबल होना अच्छा है।'

'भंते! ये दोनों कैसे?'

'अधार्मिक मनुष्य का दुर्बल होना अच्छा है। वह अधर्म से आजीविका कर दूसरों के दुःख का हेतु होता है इसलिए उसका दुर्बल होना अच्छा है।'

'धार्मिक मनुष्य का सबल होना अच्छा है। वह धर्म से आजीविका कर दूसरों के दुःख का हेतु नहीं होता, इसलिए उसका सबल होना अच्छा है।'

'भंते! जीवों का आलसी होना अच्छा है या क्रियाशील?'

'कुछ जीवों का आलसी होना अच्छा है और कुछ जीवों का क्रियाशील होना अच्छा है।'

'भंते! ये दोनों कैसे?'

'असंयमी का आलसी होना अच्छा है, जिससे वह दूसरों का अहित न कर सके।'

'संयमी का क्रियाशील होना अच्छा है, जिससे वह दूसरों का हित साध सके।''

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री मूलांजी (पचपदरा) दीक्षा क्रमांक 230

साध्वीश्री तपस्विनी थी। आपके अनेक तपों में कुछ विवरण ही प्राप्त होता है जो इस प्रकार है– सं. 1910 में 30, 1911 में 21, 1912 में 35, 1913 में 30, 1914 में 22, 1915 में 25, 1916 में 9 दिन का तप किया। आपने और भी तप किया पर विवरण उपलब्ध नहीं है।

– साभार : शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

जयाचार्य की लोकप्रिय
कृति : चौबीसी

लय-समीक्षा

चौबीसी के गीत लय की दृष्टि से सुन्दर है। उसके गीत अति श्रुति-सुखद, सुमधुर एवं सरस हैं।

इस प्रकार प्रज्ञापुरुष श्रीमद्जयाचार्य की काव्यकृति चौबीसी अध्यात्म, तत्त्वज्ञान, काव्यात्मक गुण, लय आदि अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं।

चौबीसी : आगम के आलोक में

प्रज्ञापुरुष श्रीमद्जयाचार्य जैन आगमों के मर्मज्ञ थे। उनके जीवन में श्रुत के बाहुल्य और श्रद्धा की गरिमा का कमनीय योग था। उनके तात्त्विक ग्रन्थों को पढ़ने से जहां उनके बाहुश्रुत्य और बौद्धिक बल का दर्शन होता है, वहीं उनके स्तुति-काव्यों को पढ़ने से उनका भक्त रूप और श्रद्धा-बल प्रकट होता है। उनके द्वारा रचित 'चौबीसी' ग्रन्थ में श्रद्धा, भक्ति, तत्त्वज्ञान, साधना-सूत्र एवं वैराग्य का संगम है। प्रस्तुत ग्रन्थ में मन की निर्मलता व निर्विकारता की पुनः-पुनः प्रेरणा दी गई है। मन की चंचलता का कारण है— विषयासक्ति। उसका निवारण होता है वैराग्य और साधना से। गीता में अर्जुन श्रीकृष्ण से कहते हैं-

चञ्चलं हि मनः कृष्णः प्रमाथि बलवद् दुम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये, वायोरिव सुदुष्करम्।।

हे कृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, प्रमथन स्वभाव वाला, बड़ा ही दृढ़ और बलवान् है। इसको वश में करना वायु को रोकने की भांति दुष्कर है।

श्रीकृष्ण अर्जुन को प्रतिबोध देते हैं-

असंशयं महाबाहो! मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय! वैराग्येण च गृह्यते ।।

अर्जुन! निस्सन्देह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है, परन्तु अभ्यास और वैराग्य से उसे वश में किया जा सकता है।

ठीक इसी आशय का सूत्र पातञ्जल योग दर्शन में मिलता है– '**अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः**'– अभ्यास और वैराग्य से चित्तवृत्तियों का निरोध होता है। उत्तराध्ययन सूत्र में गौतम और केशी कुमारश्रमण का संवाद प्राप्त होता है। केशी गौतम से पूछते हैं-

अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई।
जंसि गोयमः आरूढ़ो, कहं तेण न हीरसि?।।

यह साहसिक (बिना विचारे काम करने वाला), भयंकर, दुष्ट अश्व दौड़ रहा है। गौतम! तुम उस पर चढ़े हुए हो। वह तुम्हें उन्मार्ग में कैसे नहीं ले जाता? गौतम ने उत्तर दिया -

पधावतं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं।
न मे गच्छइ उम्मग्ग, मग्गं च पडिवज्जई।।

मैंने इसे श्रुत की लगाम से बांध लिया है। यह जब उन्मार्ग की ओर दौड़ता है, मैं इस पर रोक लगा देता हूं, इसलिए मेरा अश्व उन्मार्ग को नहीं जाता, मार्ग में ही चलता है।

गीता के उक्त चंचल मन और उत्तराध्ययन के उक्त दुष्ट अश्व को वश में करने के लिए वैराग्य एक सशक्त उपाय है। वैराग्य का फलित है संयम। उसके अभाव में व्यक्ति का जीवन अशान्त और असमाहित हो जाता है। भौतिक पदार्थों से सुविधा मिल सकती है पर मन की शान्ति नहीं।

आध्यात्मिकता से भौतिक सुविधा प्राप्त हो या नहीं, परन्तु चित्त-समाधि प्राप्त हो जाती है। भोग के प्रति व्यक्ति के मन में आकर्षण होता है। वह भोगासेवन में प्रवृत्त होता है, उसे तात्कालिक सुख भी मिल सकता है, परन्तु उसका परिणाम दुःखद होता है। यह तथ्य चौबीसी में इस प्रकार पद्यबद्ध किया गया है-

भोग भयंकर कटुक-फल, देख्या है दुर्गति-दातार कै।

इन्द्रिय विषय विकार थी, नरकादिक रुलियो जीव रे।

किंपाक फल नीं ओपमा, रहिये दूर थी दूर सदीव रे।।

३/३:११/४ (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

फरवरी 2026
सप्ताह के विशेष दिन

02 मार्च होलिका	02 मार्च चातुर्मासिक पक्खी
07 मार्च भगवान पार्श्वनाथ च्यवन एवं केवलज्ञान कल्याणक	08 मार्च भगवान चन्द्रप्रभु च्यवन कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री अर्जुनलालजी (नाथद्वारा) दीक्षा क्रमांक 509

मुनिश्री ने तीन बार वर्षीतप और चार बार मासखामण तप किया। आपके तप की सूची इस प्रकार है– 3/1, 4/1, 5/1, 6/1, 7/1, 8/5, 12/1, 13/1, मासखमण/4।

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
23 फरवरी - 01 मार्च 2026

विश्व कैंसर दिवस पर निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर जांच शिविर के विभिन्न आयोजन

पूर्वांचल, कोलकाता

तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता एवं ATDC, पूर्वांचल-कोलकाता ने इनर व्हील क्लब ऑफ गिरीश पार्क अर्बिया के साथ मिलकर, एक सेवा कार्य हेतु अतुल कृष्णा राय बालिका विद्यालय, सोनारपुर में 80 बालिकाओं को निःशुल्क सर्वाकल कैंसर वैक्सीन का टीका लगाया। इस सेवा कार्य में हमारे विशेष सहयोगी रहे। श्री अशोक कुमार डागा परिवार, तेरापंथ युवक परिषद, ATDC पूर्वांचल कोलकाता एवं इनर व्हील क्लब ऑफ गिरीश पार्क अर्बिया के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की उनके इस सेवा कार्य से 80 बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर जैसी भयानक बीमारी से बचाव होगी।

मध्य कोलकाता

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल निर्देशित समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल, द्वारा सर्वाइकल कैंसर Pap Smear Screening (निशुल्क जाँच) Dr. Lalpath Labs, सिन्थी मोड़, बी.टी. रोड, कोलकाता में आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण से हुई। कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. प्रीति बनर्जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल मध्य कोलकाता की अध्यक्ष सपना बिरमेचा एवं कोषाध्यक्ष सरोज नाहाटा द्वारा डॉ. प्रीति बनर्जी का दुपट्टा एवं साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। करीबन 103 बहनों ने उत्साहपूर्वक Pap Smear जाँच करवाई।

विजयनगर ,बैंगलोर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय कैंसर दिवस के अवसर पर में नारी शक्ति को कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से मुक्त एवं निरामय बनाने के उद्देश्य से तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा दिनांक 4 फरवरी 2026 को विजयनगर स्थित श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन ट्रस्ट भवन में सर्वाइकल कैंसर जागरूकता अभियान ₹आरोग्यम्₹ के अंतर्गत निःशुल्क पेप्स मेर स्क्रीनिंग जांच शिविर का आयोजन किया गया। अध्यक्षा महिमा पटवारी ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया तथा इस कार्यक्रम के उद्देश्य एवं रूपरेखा की जानकारी देते हुए कहा कि यदि आज हम जागरूक रहकर यह जांच करवा देंगे तो भविष्य में अपने अपने बच्चों एवं संपूर्ण नारी जाति के लिए उत्थान का कार्य होगा। इस कैंप में शंकरा हॉस्पिटल से डॉक्टर शुभश्री टी. ने कहा दुनिया में सर्वाइकल कैंसर चौथे नंबर पर आता है। विजयनगर महिला मंडल ने यह जो कदम उठाया है वह बहुत ही सार्थक है । बचाव ही सबसे बड़ा उपचार है। शंकरा हॉस्पिटल से श्रीनिवास एवं नटुस हॉस्पिटल से श्रीकांत का कैंप के आयोजन में विशेष सहयोग रहा। अभातेममं सह मंत्री मधु जी कटारिया ने शिविर आयोजन हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की।

हैदराबाद

विश्व कैंसर दिवस पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में समृद्ध राष्ट्र योजना के तहत औरआरोग्यम प्रोजेक्ट के अंतर्गत,तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह आयोजन दो स्थानों पर किया गया। पहला महावीर होस्पीटल व सिओन कैंसर क्लीनिक के सहयोग से महावीर होस्पीटल में तथा दूसरा यशोदा हास्पीटल के सहयोग से डी वी कोलोनी,तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में लगाया गया। तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद की अध्यक्ष नमिता सिंघी ने आगंतुक सभी मेहमानों का स्वागत किया। डाक्टर ने सर्वाइकल कैंसर के बारे में विस्तृत जानकारी सभी बहनों को प्रदान की।इस अवसर पर तेरापंथ सभा , अणुव्रत समिति, जीटो हैदराबाद लेडीज विंग, चंदनबाला महिला मंडल की संरक्षिका निर्मला बरमेचा , महावीर हॉस्पीटल की ट्रस्टी डॉ आशा आदि की उपस्थिति रही। दोनों स्थानों पर मिलाकर लगभग 200 महिलाओं का निःशुल्क पेप स्मियर टेस्ट किया गया।

तिरुपुर

आ.भा.ते.म.म. के तत्वाधान में तिरुपुर महिला मंडल के द्वारा आयोजित आरोग्यम कार्यशाला के अन्तर्गत वर्ल्ड कैंसर डे पर पेप स्मीयर कैंसर टेस्ट आयोजित किया गया। स्वागत वक्तव्य अध्यक्षा सारिता शामसुखा द्वारा किया गया ।प्रोजेक्ट से जुड़ी विस्तृत जानकारी आ.भा.ते.म.म.की कार्यकारिणी सदस्या अनिता बारड़िया द्वारा दी गई। यह screen test कैम्प रेवती हॉस्पिटल की पूर्ण देखरेख में तिरुपुर महिला मंडल द्वारा निः शुल्क आयोजित किया गया। इस जाँच में तिरुपुर कि अन्य संस्था कि स्थानीय बहनों ने भी जाँच कराई ।तिरुपुर महिला मण्डल द्वारा 64 बहिनों की निःशुल्क जाँच कराई गई। कार्यक्रम में सभा ,युवक परिषद के भी पधादिकारी उपस्थिति रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन कोषाध्यक्ष श्वेता कोठारी और आभार सहमंत्री पूनम कोठारी द्वारा किया गया।

साउथ हावड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय कैंसर दिवस के पावन अवसर पर नारी शक्ति को सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर एवं जानलेवा बीमारी से मुक्त कर स्वस्थ जीवन प्रदान करने के उद्देश्य से तेरापंथ महिला मंडल, साउथ हावड़ा द्वारा साउथ हावड़ा स्थित EYORA Clinic में "आरोग्यम्" अभियान के अंतर्गत PAP SMEAR SCREENING जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के पावन उच्चारण के साथ हुआ। मंत्री बहन लक्ष्मी गिड़िया ने सभी अतिथियों, डॉक्टरों एवं बहनों का स्वागत-अभिनंदन करते हुए इस कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर EYORA Clinic के डॉ. सुनील सुराणा एवं डॉ. इन्दु सुराणा के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया गया, जिन्होंने शिविर आयोजन हेतु स्थान एवं पूर्ण सहयोग प्रदान किया। डॉ. इन्दु सुराणा ने जानकारी देते हुए बताया कि 9 से 25 वर्ष की महिलाओं के लिए सर्वाइकल कैंसर से बचाव हेतु वैक्सीनेशन की सुविधा उपलब्ध है, जिससे भविष्य में इस बीमारी से सुरक्षित रहा जा सकता है। शिविर में जांच कार्य में सहयोग देने वाले सभी डॉक्टरों एवं उनकी टीम का दुपट्टा एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री बहन लक्ष्मी गिड़िया द्वारा किया गया। इस जांच शिविर में 125 बहनों ने अपनी जांच कराकर स्वास्थ्य जागरूकता की दिशा में एक सशक्त कदम बढ़ाया।

पर्वत पाटिया

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल पर्वत पाटिया द्वारा विश्व कैंसर दिवस पर निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर (pap smear screening) जांच शिविर का आयोजन विवेक हॉस्पिटल उधना दरवाजा में किया गया। प्रथम सत्र उद्घाटन व सम्मान का रहा जिसमें डॉक्टर कमला व सभी सभा संस्था के पदाधिकारी गणों की महनीय उपस्थिति रही। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया गया उसके पश्चात कार्यक्रम को मंगलमय बनाया मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण से।अध्यक्ष सुमन बैद ने सभी का स्वागत करते हुए इस कार्यक्रम की जानकारी दी। कार्यकारिणी सदस्य सुनीता पारख ने सभी को डॉ कमला का परिचय दिया। डॉ कमला ने पैप स्मियर टेस्ट के बारे में सभी को बताते हुए कहा कि एक बहुत छोटा सा टेस्ट है पर लेडिज को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनते हुए हर 2 से 3 साल से यह करवाना चाहिए । सभा मंत्री प्रदीप गंग, ज्ञानचंद कोठारी ने भी अपने भाव व्यक्त किए। सह मंत्री रेखा चौधरी द्वारा सभी का आभार ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री मधु झाबक ने किया। कार्यक्रम के संयोजक कुसुम बोथरा ,ललिता पारख, रंजना कोठारी के अथक श्रम से 75 बहिनों की टेस्टिंग करवाई गई।

इचलकरंजी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल निर्देशित विश्व कैंसर दिवस के उपलक्ष्य में "आरोग्यम" (जिसमें PAP SMEAR CANCER TEST किया गया) का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, इचलकरंजी ने आज सफलता पूर्वक किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुआ। प्रमुख वक्ता व अतिथि डॉ रेशमा सूरज पवार (Director of Kolhapur Cancer Center) ने कैंसर के बारे में सविस्कृत जानकारी दी और सभी से विशेष आवाहन किया कि आम तौर पर महिलाएँ जो यह टेस्टिंग करने से घबराते है, उन्हें बिलकुल न घबराकर जागरूकता के साथ करवाना चाहिए। आज cancer का इलाज सहज हो गया है और समय से पता चलने से आसानी से इसका इलाज हो जाता है। उनका मार्गदर्शन से सभी में एक नया उत्साह देखने मिला। उनके प्रेरणा व सभी के श्रम से 176 महिलाएँ टेस्टिंग किये । अध्यक्षा विजया देवी बालर ने अपने स्वागत भाषण में एक नयी सोच का स्वागत करने का आवाहन किया। अभातेमम कार्यकारिणी सदस्य व इस कार्यक्रम की सहसंयोजिका जयश्री जोगड़ ने दी । इस कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री अशोकजी बाफना, तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष सुरेंद्र छाजेड़ आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सचिव समता चोपड़ा ने किया और आभार ज्ञापन सह संयोजिका नीता महेंद्र छाजेड ने किया।

मदुरै

विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन एवं आरोग्यं प्रोजेक्ट के अंतर्गत मदुरै तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में निःशुल्क पैप स्मियर (Pap Smear) स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया गया। शिविर अपोलो हॉस्पिटल, मदुरै के अनुभवी चिकित्सकीय दल की देखरेख में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। मंडल की अध्यक्षा दीपिका फुलफगर ने अपोलो हॉस्पिटल की ओर से डॉ. हेलेन, नर्सिंग स्टाफ का स्वागत एवं सम्मान करते हुए उनके सहयोग के लिए खूब-खूब धन्यवाद ज्ञापित किया। विशेष कर अपोलो हॉस्पिटल सी.ओ.ओ. श्री निखिल तिवारी एवं MHC हेड राजेश का भी खूब खूब धन्यवाद किया। इस अवसर पर डॉ. हेलेन ने महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए पैप स्मियर जांच के महत्व पर प्रकाश डाला तथा बताया कि यह जांच महिलाओं के लिए अत्यंत आवश्यक है और इसे प्रत्येक 2 से 3 वर्ष में अवश्य करवाना चाहिए। शिविर में स्थानीय क्षेत्र की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिसमें कुल 57 महिलाओं की निःशुल्क जांच की गई। उपाध्यक्षा रेखा दुगड़ ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

जसोल

अखिल भारतीय तेरापन्थ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा अध्यक्ष ममता मेहता की अध्यक्षता में आरोग्यम प्रोजेक्ट के तहत, पेप्स मियर सर्विक्स सर्वाइकल कैंसर निःशुल्क टेस्ट केम्प का आयोजन किया गया। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. पूजा पालीवाल द्वारा मोटिवेशनल स्पीच दी गई। साथ ही कैंसर रोग की विस्तृत जानकारी दी। शिविर में लगभग 100 महिलाओ ने अपनी टेस्टिंग करवाई। कार्यक्रम में अभातेममं विशेष आमंत्रित सदस्य सारिका बागरेचा, महासभा कार्यकारिणी सदस्य गौतमचन्द सालेचा, जसोल चिकित्सा प्रभारी डॉ. विक्रमसिंह राजपुरोहित आदि उपस्थित रहे ।कार्यक्रम का सफल संचालन उपाध्यक्ष रक्षा सालेचा ने किया तथा सभी के सहयोग के आभार ज्ञापन किया।

विश्व कैंसर दिवस पर निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर जांच शिविर के विभिन्न आयोजन

साउथ कोलकाता

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देश पर साउथ कोलकाता महिला मंडल ने तेरापंथ भवन, हेल्थ प्वाइंट नर्सिंग होम, आइरिस हॉस्पिटल व रेड स्टार एसोसिएशन क्लब में पैप-स्मीयर टेस्ट कैंप आयोजित किए। तेरापंथ भवन में पल्स डायग्नोस्टिक लैब की सीओओ श्रीमती सुनयना बिहानी, रोटेरियन डॉ. रीना मालपानी, डॉ. अपर्णा व डॉ. सुप्रतीक विश्वास एवं नर्सिंग व सपोर्टिंग स्टाफ़ शामिल हुए। हेल्थ प्वाइंट मल्टी स्पेशियलिटी नर्सिंग होम में डॉ उर्मिला कुंडलिया एवं उनकी टीम की देख रेख में पैप-स्मीयर टेस्ट किया गये। डॉक्टर अनुराधा एवं डॉक्टर मेघा की देख रेख में पैप स्मीयर स्क्रीनिंग टेस्ट किये गया। अध्यक्ष बिंदु डागा के सशक्त निर्देशन तथा सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से साउथ कोलकाता महिला मंडल ने 200+ के लक्ष्य को हासिल करते हुए कुल 224 महिलाओं की टेस्टिंग करवाई।

गुवाहाटी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से विश्व कैंसर दिवस के उपलक्ष्य पर निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर पेप स्मियर जांच शिविर का आयोजन तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। मुख्य अतिथि रत्ना सिंह (उपाध्यक्ष, भाजपा, असम प्रदेश एवं वार्ड संख्या 31 की पार्षद) व सभी गणमान्य व्यक्तियों को मंच पर सम्मानपूर्वक आमंत्रित किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा सुशीला मालू द्वारा स्वागत भाषण दिया गया।महिला मंडल की बहनों द्वारा पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का फुलाम गमछा व उपहार देकर सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि रत्ना सिंह ने अपने उद्बोधन में महिलाओं के लिए नियमित सर्वाइकल कैंसर की समय पर पहचान तथा रोकथाम के महत्व पर प्रकाश डाला एवं डॉ. सुप्रिया हजारिका ने जानकारी दी कि महिलाओं के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच अत्यंत आवश्यक है तथा समय पर जांच करने से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बचाव संभव है। इस अवसर पर अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य सुनीता गुजरानी एवं विशेष आमंत्रित सदस्य शिखा बोथरा की गरिमामयी उपस्थिति रही। शिविर में कुल 87 महिलाओं की सर्वाइकल कैंसर जांच सफलतापूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री सुचित्रा छाजेड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में ममता घोड़ावत ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

किलपॉक, चेन्नई

विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सम्पूर्ण भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य संरक्षण हेतु पैप स्मीयर (सर्वाइकल कैंसर) स्क्रीनिंग अभियान का व्यापक आयोजन किया गया।अभियान का उद्देश्य महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा रोग की प्रारंभिक अवस्था में पहचान कर जीवन की रक्षा करना रहा। इसी क्रम में तेरापंथ किलपॉक महिला मंडल ने अत्यंत सराहनीय योगदान देते हुए 13 केंद्रों पर सफलतापूर्वक जांच शिविर आयोजित किए। मंडल की अथक मेहनत एवं सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली के परिणामस्वरूप निर्धारित लक्ष्य को पार करते हुए कुल 802 पैप स्मीयर स्क्रीनिंग टेस्ट संपन्न किए गए। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक परमार, उनकी टीम के मंत्री वनीता नाहर, राजकुमारी दुगड , राज नाहर, तथा डॉ. विमला सोहनराज विशेष रूप से उपस्थित रहे। परियोजना चिकित्सकों डॉ. शालिनी ललित कुमार एवं डॉ. नीलू कैलाश मांडोत को उनके निःस्वार्थ, समर्पित एवं मानवीय सेवाभाव के लिए विशेष धन्यवाद एवं कृतज्ञता व्यक्त की गई।

पृष्ठ 1 का शेष

पूर्व कर्मों का क्षय...

सावद्य भाषा नहीं बोलनी चाहिए। कटुभाषा से भी बचने का प्रयास करना चाहिए। रत्नाधिक साधु-साध्वियों के प्रति विनय का भाव रखें। शुद्ध आहार भी दाता का अभिप्राय जानकर लें। हमारी समितियां और गुप्तियां साधना की दृष्टि से बहुत आवश्यक होती है अतः सभी को अपने नियमों और आचार के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिए।

आज चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी के क्रम को संपादित करते हुए आचार्य प्रवर ने साधु-साध्वियों को विविध प्रेरणाएं प्रदान की। जैन दर्शन, प्रेक्षाध्यान, आदि विषयों पर साध्वियों और समणियों के प्रशिक्षण की जिम्मेदारी पूज्य प्रवर ने बहुश्रुत परिषद् की सदस्य साध्वी कनकश्री को सौंपी। मुनि कुमारश्रमणजी को संतों के व पुरूषों के प्रेक्षाध्यान और मुनि योगेशकुमारजी को तत्त्वज्ञान से संदर्भित जिम्मेदारी वहन करने हेतु कहा। सभी चारित्रात्माओं ने खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। साध्वी स्तुतिप्रभाजी ने गीत का संगान किया। साध्वी निर्णय प्रभाजी, साध्वी शशिप्रभाजी व साध्वी रोशनप्रभाजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

जीवन में अनासक्ति की...

हम मन वाले प्राणी हैं, संज्ञी हैं अतः हमारे मन में कल्याणकारी और पवित्र संकल्प रहने चाहिए, मन में दुर्विचार नहीं आने चाहिए। यदि न चाहते हुए भी मन में दुर्विचार आ जाएं तो किसी अच्छे पाठ जैसे नवकार मंत्र, आदि का उच्चारण कर लेना चाहिए अथवा मन में यह विचार कर लेना चाहिए कि इन दुर्विचारों को मेरा समर्थन नहीं है। ऐसा करने से विशेष पाप कर्मों का बंध नहीं होगा। व्यक्ति के जीवन में दृढ़धर्मिता बनी रहे, चाहे कितनी भी कठिनाई आ जाए धर्म के प्रति आस्था कम नहीं होनी चाहिए। हम हमारे जीवन में अनासक्ति की साधना करने का प्रयास करें, यह काम्य है। मंगल प्रवचन के उपरान्त पूज्य प्रवर ने हनुमानगढ़ टाउन में चातुर्मास संपन्न कर कई वर्षों बाद गुरु दर्शन हेतु पहुँची साध्वियों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। नवदीक्षित साध्वी सुकृत प्रभाजी को आचार्य प्रवर ने आर्षवाणी के उच्चारण के साथ छेदोपस्थापनीय चारित्र प्रदान किया तथा नवदीक्षित समणी गीत प्रज्ञाजी को समणी जीवन के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान की। गुरु सन्निधि में हनुमानगढ़ टाउन में चातुर्मास संपन्न कर पहुँची साध्वी सूरजप्रभाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी और सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। जैन विश्व भारती के मंत्री सलिल लोढ़ा ने आचार्य प्रवर की सन्निधि में प्रारंभ हो रहे, चित्त समाधि शिविर के संदर्भ में जानकारी प्रदान की।

बोलती किताब

दीये से दीया जले

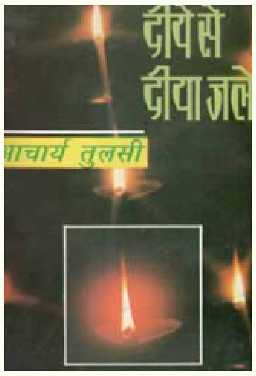

मनुष्य के भीतर विश्वास, शक्ति और आनंद का अथाह भंडार है, किंतु आधुनिक जीवन की जटिलताओं, भय और अनिश्चितताओं ने उसे इन क्षमताओं से दूर कर दिया है। आज का व्यक्ति बाहरी उपलब्धियों में उलझा रहकर आंतरिक संपदा का स्पर्श तक नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप वह अस्थिर, भयाक्रांत और भ्रमजाल में फंसा जीवन जीने को विवश है। यह स्थिति केवल व्यक्ति की नहीं, समूचे समाज की है, जहाँ विश्वास क्षीण और संदेह प्रबल होता जा रहा है।

इसी अविश्वास और मूल्य-संकट के युग में अध्यात्म और नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा की आवश्यकता तीव्र हो उठी है। विश्वास और आत्मविश्वास ही जीवन को दिशा, उद्देश्य और अर्थ देते हैं। बिना इन मूल्यों के मनुष्य केवल श्वासों का संचलन मात्र है, जीवन नहीं। आचार्यों और चिंतकों का अनुभव भी यही बताता है कि अध्यात्म की ज्योति ही भीतर के अंधकार को काट सकती है।

इन्हीं सत्यों को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से अणुव्रत आन्दोलन और उससे जुड़े साहित्य ने एक सशक्त भूमिका निभाई है। साध्वी-प्रमुखा कनकप्रभा द्वारा 'बैसाखियाँ विश्वास की' और बाद में 'दीये से दीया जले' जैसे ग्रंथों का संपादन इसी प्रेरणा का विस्तार है। इन पुस्तकों ने पाठकों को उनके डोलते हुए विश्वास को स्थिर करने तथा आत्मबल जागृत करने का आधार प्रदान किया।

आज जब श्रव्य-दृश्य माध्यमों का वर्चस्व साहित्य के आकर्षण को चुनौती दे रहा है, तब भी आत्मिक और नैतिक मूल्यों को प्रज्वलित करने में साहित्य की दीर्घकालिक शक्ति को नकारा नहीं जा सकता। विश्वास की ज्योति यदि एक बार जग उठे, तो वह हजारों ज्योतियाँ जलाने का सामर्थ्य रखती है। यही संदेश, यही प्रेरणा और यही लोकमंगल की भावना इन विचारों की शृंखला के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

कन्वोकेशन और मेडल समारोह का हुआ आयोजन

हैदराबाद।

सिकंदराबाद तेरापंथ सभा के तत्वावधान में आज डीवी कॉलोनी भवन में कन्वोकेशन और मेडल समारोह का आयोजन किया गया। आंध्रा तेलंगाना की आंचलिक संयोजिका सीमा दस्सानी ने स्वागत भाषण से आगंतुकों का स्वागत किया। सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। प्रशिक्षिकाओं के द्वारा स्वागत गीतिका का गान किया गया। तारनाका और काचीगुड़ा ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। 39 बच्चों ने हैदराबाद लेवल पर टॉप किया। 39 बच्चों ने भाग 5 पूर्ण कर लिया है। उन बच्चों का केप और सेश पहना कर सम्मान किया गया। बेस्ट ज्ञानशाला का अवार्ड हाइटेक सिटी ज्ञानशाला को मिला। इंटर गेम प्रतियोगिता के अंतर्गत काफी ज्ञानशालाओं ने अपने गेम बनाकर सबमिट किया। कार्यक्रम का संयोजन उषा सुराणा ने किया। परीक्षा व्यवस्थापक सरिता नखत ने कन्वोकेशन और टॉपर्स बच्चों को स्टेज पर सम्मान के लिएआमंत्रित किया। कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष सुशील संचेती की गरिमामयी उपस्थिति रही। जूली बैद के आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

मोक्ष की प्राप्ति में गुस्सा और अहंकार उत्पन्न करते हैं बाधा : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
10 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत वाड़मय के माध्यम से अपनी पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में मोक्ष की बात नव तत्त्वों में भी मिलती है और साधना की अंतिम निष्पत्ति मोक्ष के रूप में होती है। मोक्ष की अवस्था में आठ कार्यों में से कोई भी कर्म विद्यमान नहीं रहता है। मोक्ष के रूप में जो जीव हैं वे अशरीरी हैं, अवाक् हैं और अमन है।

आक्रोश की प्रवृत्ति मोक्ष में एक बाधा है। आक्रोश, गुस्सा मोहनीय कर्म के उदय से होता है। दूसरी बाधा है - अंहकार। व्यक्ति को बुद्धि का और ऋद्धि का भी घमंड हो सकता है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम में मति संपदा प्राप्त हो सकती है, परन्तु बुद्धि या ज्ञान की निष्पत्ति भी अहंकार हो सकता है। ज्ञान होने पर भी मौन रहना, सबके साथ सहिष्णुता का भाव रखना बड़प्पन होता है। इसी प्रकार दान करने पर भी ख्याति की कामना नहीं रखनी चाहिए। गुप्त दान को महापुण्य कहा गया है। व्यक्ति को अपनी सुन्दरता का भी घमंड नहीं करना चाहिए। तपस्या आदि का भी अहंकार करना ठीक नहीं होता क्योंकि तपस्या तो व्यक्ति अपने आत्मकल्याण के लिए करता है। इसी प्रकार लब्धि, ऐश्वर्य सत्ता आदि हों तो उनका प्रदर्शन और अहंकार नहीं करना चाहिए।

सहसा-बिना सोचे विशेष काम नहीं करना चाहिए, अविवेक परम आपत्तियों का स्थान है। विमर्श पूर्वक कार्य करने वाले का संपत्ति वरण करती है। परिश्रम करना एक सफलता का आयाम है। व्यक्ति बड़ा हो या छोटा सबके लिए परिश्रम करणीय है। आलस्य परम शत्रु और परिश्रम हमारा बन्धु है, इसे साथ रखना चाहिए।

यथा अनुकूलता परिश्रम करने में व्यक्ति को संकोच नहीं करना चाहिए। अतः आगम में जो मोक्ष प्राप्ति की बाधाएं बताई हैं जैसे-गुस्सा, अहंकार, अनुशासनहीनता आदि से हम बचकर रहें ताकि मोक्ष की प्रप्ति में निर्बाधता रहे।

मंगल प्रवचन के उपरांत आज भी चारित्रात्माओं के बोलने का क्रम रहा। साध्वी सुप्रभाजी व साध्वी प्रमिलाकुमारीजी का सिंघाड़ा संयुक्त रूप से तथा साध्वीप्रज्ञावतीजी, साध्वी शशिरेखाजी व साध्वी रचनाश्रीजी के सिंघोड़ ने पृथक-पृथक गीतों का संगान कर आचार्य प्रवर की अभ्यर्थना की। मुनिश्री सुमतिकुमारजी व मुनिश्री पृथ्वीराजजी (जसोल) ने भी अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए आचार्यश्री की अभ्यर्थना की।

पाँच महाव्रतों में रहे साधु का उत्कृष्ट आचरण : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
11 फरवरी, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में आर्हत वाङ्मय के माध्यम से पावन संबोधन प्रदान किया। उन्होंने फरमाया कि साधु का जीवन उच्च कोटि का होता है। तेरापंथ धर्मसंघ की आचार-व्यवस्था और मर्यादाओं का सम्यक् पालन करने वाला साधु ही श्रेष्ठ साधुत्व को प्राप्त कर सकता है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु के लिए पाँच महाव्रत उसकी अमूल्य संपत्ति हैं—सर्वप्राणातिपात विरमण (अहिंसा), सर्वमृषावाद विरमण (सत्य), सर्व अदत्तादान विरमण (अचौर्य), सर्व मैथुन विरमण (ब्रह्मचर्य) तथा सर्व परिग्रह विरमण (अपरिग्रह)। ये पाँचों महाव्रत अत्यंत संयमयुक्त हैं। साधु को सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों के प्रति भी अहिंसा का ध्यान रखना चाहिए। स्थावर जीवों के प्रति भी अहिंसा का पालन आवश्यक है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि कोई अप्रमत्त, वीतराग साधु जागरूकता से चलते हुए अनजाने में किसी सूक्ष्म जीव की हिंसा कर बैठता है, तो वह पाप का भागीदार नहीं होता; किंतु यदि प्रमाद की स्थिति में हो, तो भले ही जीव की मृत्यु न हो, पाप बंधन संभव है।

दूसरा महाव्रत सर्वमृषावाद विरमण है। साधु को किसी के हित में भी असत्य नहीं बोलना चाहिए। क्रोध, लोभ, भय अथवा हास्य की अवस्था में भी झूठ वर्जित है। तीसरा महाव्रत सर्व अदत्तादान विरमण है—साधु को छोटी से छोटी चोरी से भी बचना चाहिए और कोई वस्तु लेने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। चौथा है सर्व मैथुन विरमण संयम की साधना है तथा पाँचवा सर्व परिग्रह विरमण के अंतर्गत साधु के स्वामित्व में धन, संपत्ति, बैंक बैलेंस, भूमि, भवन आदि कुछ भी नहीं होना चाहिए। धर्मोपकरणों एवं वस्त्रों की भी सीमितता आवश्यक है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि इन पाँच महाव्रतों के साथ-साथ धर्मसंघ की मर्यादाओं का पालन अनिवार्य है—एक आचार्य की आज्ञा में रहना, समितियों और गुप्तियों का सम्यक् पालन करना तथा संघीय अनुशासन में स्थित रहना ही साधुत्व की रक्षा करता है। आचार और मर्यादाओं के अंतर्गत रहकर ही साधु का कल्याण संभव है।

मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वी बसंतप्रभाजी एवं साध्वी सुदर्शनाश्रीजी ने संयुक्त प्रस्तुति दी। साध्वी संघप्रभाजी, साध्वी प्रणवप्रभाजी तथा साध्वी जिनबालाजी ने गुरु सन्निधि में श्रद्धाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। कार्यक्रम में आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान शिविर के प्रतिभागियों को उपसंपदा भी प्रदान की।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

समर्पण का स्वर

आचार्य भिक्षु के पास श्रद्धा का भी अमित बल था। वे जितने तार्किक थे उतने ही श्रद्धालु थे। श्रद्धा और तर्क के संगम में ही व्यक्ति का दृष्टिकोण पूर्ण बनता है। कुसुम्बा स्वयं गलकर दूसरों को रंगता है। भक्त हृदय का गीलापन दूसरों को स्निग्ध कर देता है। आचार्य भिक्षु की अटल आस्था इस कोटि की है कि वे भगवान् महावीर और उनकी वाणी पर स्वयं को न्यौछावर कर चलते हैं। उनके समर्पण की भाषा यह है– प्रभो! आपने सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप को मुक्ति का मार्ग कहा है। मैं इनके सिवा और किसी तत्त्व को धर्म नहीं मानता। मैं अर्हत् को देव, निर्ग्रन्थ को गुरु और आपके द्वारा प्ररूपित मुक्ति-मार्ग को ही धर्म मानता हूं। मेरे लिए दूसरा सब भ्रमजाल है। मेरे लिए आपकी आज्ञा ही सर्वोपरि प्रमाण है।

वे धर्म को एक मानते थे। मिथ्यादृष्टि की निरवद्य प्रवृत्ति धर्म है– इसका दृढ़तापूर्वक समर्थन कर उन्होंने जैन परम्परा के उदार दृष्टिकोण को बहुत ही प्रभावशाली बना दिया। अमुक सम्प्रदाय का अनुयायी बनने से ही धर्म होता है, अन्यत्र नहीं। इस भ्रमपूर्ण मान्यता का उनकी स्पष्ट वाणी से स्वतः खण्डन हो गया। धर्म और सम्प्रदाय एक नहीं है, इस सचाई की उन्हें गहरी अनुभूति थी। उन्होंने कहा– निरवद्य प्रवृत्ति धर्म है, भले फिर वह जैन की हो या जैनेतर की। सावद्य प्रवृत्ति अधर्म है, भले फिर वह जैन की हो या जैनेतर की।

भगवान् का धर्म समुद्र की तरह विशाल और आकाश की तरह व्यापक है। जो धर्म शुद्ध, नित्य और शाश्वत है, भगवान् ने जिसकी व्याख्या की है, वह है एक शब्द में– अहिंसा। भगवान् ने कहा– प्राण, भूत, जीव और सत्वों को मत मारो, उन पर अनुशासन, मत करो, उन्हें दास-दासी बनाकर अपने अधीन मत करो उन्हें परिताप मत दो, उन्हें कष्ट मत दो, उन्हें उपद्रुत मत करो- यही धर्म ध्रुव, नित्य और शाश्वत है। यह धर्म सबके लिए है, जो धर्म के आचरण के लिए उठे हैं या नहीं उठे हैं। जो धर्म सुनना चाहते हैं या नहीं चाहते हैं, जो प्राणियों को दण्ड देने से निवृत्त हुए हैं या नहीं हुए हैं, जो उपाधि से युक्त हैं या उपाधि से रहित हैं, जो संयोग से बंधे हुए हैं या नहीं है।

जीव जीता है, वह अहिंसा या दया नहीं है। कोई मरता है, वह हिंसा नहीं है। मारने की प्रवृत्ति हिंसा है और मारने की प्रवृत्ति का संयम करना अहिंसा है।

आक्रमण के प्रति आक्रमण और शक्ति-प्रयोग के प्रति शक्ति-प्रयोग कर हम हिंसा के प्रयोगात्मक रूप को टालने में सफल हो सकें, यह सम्भव है। पर वैसा हम हृदय को पवित्र कर सकें या करा सकें, यह संभव नहीं। आचार्य भिक्षु ने कहा– शक्ति के प्रयोग से जीवन की सुरक्षा की जा सकती है पर वह अहिंसा नहीं है।

अनाचार करने वाले को समझा-बुझाकर अनाचार से छुड़ाना, यही है अहिंसा का मार्ग। हिंसा और वध सर्वथा एक नहीं है। अहिंसक के द्वारा भी किंचित् अशक्य कोटि का वध हो सकता है, किन्तु यदि उसकी प्रवृत्ति संयममय हो तो वह हिंसा नहीं होती। वध को बल प्रयोग से भी रोका जा सकता है किन्तु वह अहिंसा नहीं होती। अहिंसा तभी होती है जब हिंसा करने वाला समझ बूझकर उसे छोड़ता है। आचार्य भिक्षु ने कहा– प्रेरक का काम हिंसक को समझाने का है। अहिंसा के क्षेत्र में वह यहीं तक पहुंच सकता है। हिंसा तो तब छूटेगी जब हिंसा करने वाला उसे छोड़ेगा।

अहिंसा का पालन वही कर सकता है, जिसका मन दया से भीगा हुआ हो। पर साधन की विकृति से दया भी विकृत बन जाती है। एक आदमी मूली खा रहा है। दूसरे के मन में मूली के जीवों के प्रति दया उत्पन्न हुई। उसने बल-प्रयोग किया और जो मूली खा रहा था, उसके हाथ से वह छीन ली। दया का यह साधन शुद्ध नहीं है। हिंसक वही होता है, जो हिंसा करे, जिसके मन में हिंसा का भाव हो और अहिंसक भी वही होता है, जो अहिंसा का पालन करे, जिसके मन में अहिंसा का भाव हो। बलात् किसी को हिंसक या अहिंसक नहीं बनाया जा सकता। भोग धर्म नहीं है, यह जानकर यदि कोई बलात् किसी के भोगों का विच्छेद करता है तो वह अधर्म करता है।

मुक्ति का मार्ग सबके लिए एक है। मुमुक्षुभाव गृहस्थ में भी रहता है और मुनि में भी। मुनि गृहवास को छोड़कर सर्वारम्भ से विरत रहता है, इसलिए वह मोक्ष-मार्ग की आराधना का पूर्ण अधिकारी होता है। एक गृहस्थ गृहवास में रहकर सर्वारम्भ से विरत नहीं हो पाता, इसलिए वह मोक्ष-मार्ग की आराधना के पथ का एक सीमा तक अधिकारी होता है। किन्तु मोक्ष-मार्ग की आराधना का पथ दोनों के लिए एक है।

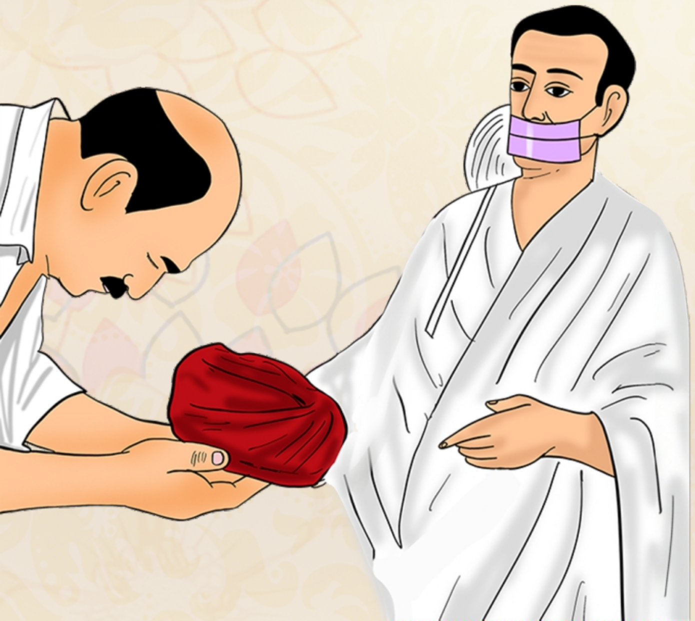

भिक्षु की कहानी
जयाचार्य की जुबानी

जीव भारहीन कैसे होता है?

किसी ने पूछा– जीव हल्का कैसे होता है?

तब स्वामीजी बोले– पैसा पानी में डालने पर डूब जाता है और उसी पैसे को तपा, कूट-पीट कर उसकी कटोरी बना लेने पर वह तैरने लग जाती है। उस कटोरी में रखा हुआ पैसा भी तैरने लग जाता है। इसी प्रकार जीव तप, संयम आदि के द्वारा हल्का हो जाता है और हल्का होने के कारण वह तर जाता है।

क्या आप जानते हैं?

विगय के छह प्रकार हैं– 1. दूध, 2. दही 3. तैल 4. घी 5. मिष्ट 6. कढाई-मिश्रित।

- **दूध– फीका दूध, फीका छन्ना, दूध का पाउडर, दूध का फीका पेड़ा, फीका मावा आदि।**
- **दही– केवल दही, बंधा हुआ दही, चीनी आदि से रहित मट्ठा (मक्खन रहित छाछ व छाछ की राबड़ी विगय नहीं।)।**
- **तेल– केवल तेल जैसे:– सरसों, बादाम, नारियल का तेल। तेल से कुल्ला करने में विगय नहीं लगती। काजु, बादाम आदि मेवा सामान्य विगय वर्जन में वर्जनीय नहीं है।**

साप्ताहिक प्रेरणा

।। क्रोध करने का त्याग करे ।।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अनेक चित्तों को एक में समाहित कर धर्म के प्रति रहें समर्पित : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
12 फरवरी, 2026

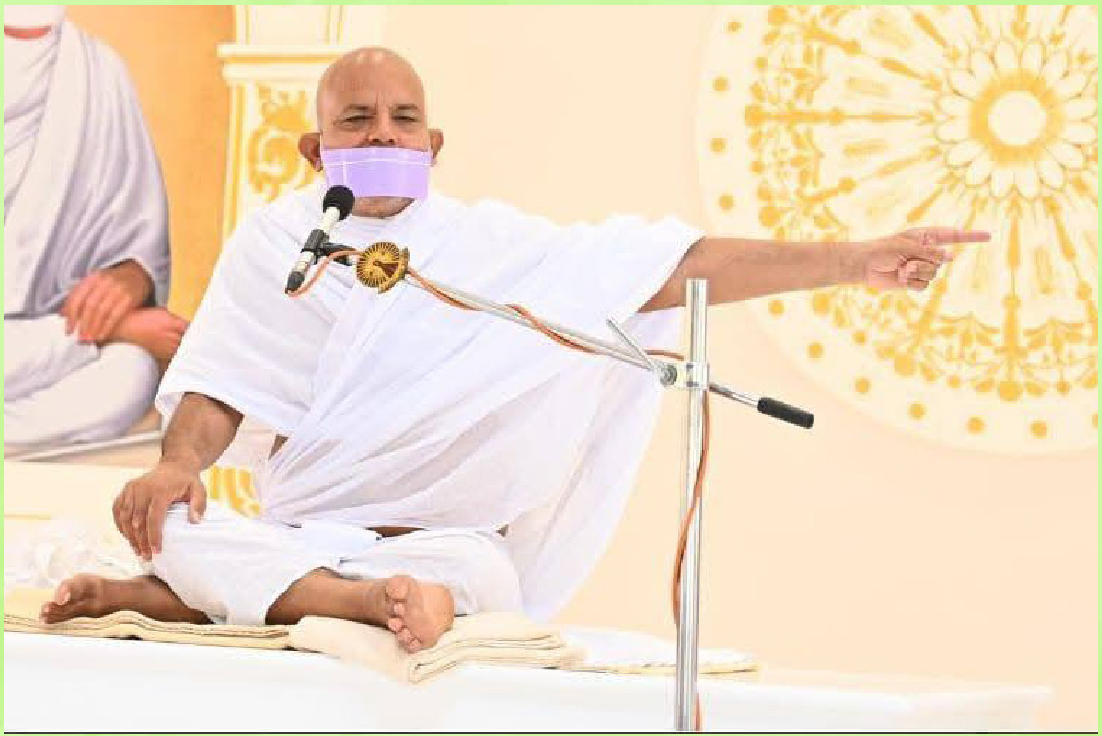

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, व्यसनमुक्ति के प्रेरक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हतवाड़मय के माध्यम से अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि 'यह पुरूष अनेक चित्तों वाला होता है।' व्यक्ति के मन में भाव उतरते हैं। मन और भाव का गहरा संबंध बताया गया है। मन भावों का ग्राहक और भाव मन के ग्राह्य हैं। जैसे मनुष्य के पांच इंद्रियां है और पांच इंद्रियों का अपना-अपना व्यापार होता है।

कान का विषय है शब्द और व्यापार है सुनना। आंख का विषय रूप और व्यापार देखना। नाक, जिह्वा और स्पर्श के भी विषय और व्यापार होते हैं। सबकी अपनी-अपनी प्रवृत्ति भी होती है। ये पांच इंद्रियां ज्ञानेंद्रियां है।

पांच कर्मेन्द्रियां भी होती है जो मूलतः प्रवृत्ति के साधन है। परन्तु श्रोत्र, चक्षु ज्ञान की माध्यम बनती है, साथ ही भोग भी होता है। उपयोग चेतना की प्रवृत्ति होती है। चेतना की प्रवृत्ति ज्ञान और दर्शन है। केवल ज्ञानी और सिद्धावस्था में भी चेतना की प्रवृत्ति होती है।

केवल ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात चेतना की प्रवृत्ति के लिए इंद्रियों और शरीर की आवश्यकता नहीं रहती है। एक समय जानना और एक समय देखना ज्ञान, दर्शन की प्रवृत्ति चलती है। इन्द्रियों की प्रवृत्ति सशरीरी अवस्था में होती है। परन्तु केवल ज्ञान होने के बाद अनीन्द्रिय अवस्था हो जाती है, यद्यपि द्रव्येन्द्रियां रहती है।

सामान्य मनुष्य संज्ञी है, समूर्च्छिम मनुष्य असंज्ञी है परन्तु केवल ज्ञानी नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी होती है। पांच इन्द्रियां के अपने-अपने विषय नियत होते हैं परन्तु मन सारे विषयों का ग्रहण करने वाला होता है। उत्तराध्ययन सूत्र में मन को भावों का ग्राहक कहा गया है। पांच इन्द्रियां वर्तमान में अपने-अपने विषय को ग्रहण करती है पर मन की विशेषता है कि अतीत में जो घटनाएं घटी, उन्हें भी मन ग्रहण कर लेता है। भविष्य में होने वाले घटनाक्रम के विषय में भी मन कल्पना कर सकता है। मन के चित्रपट पर अनेक दृश्य उभरते हैं। सुबह दिमाग में कोई एक बात आती है और शाम होते-होते कुछ और भाव बदल जाता है। एक समय व्यक्ति शांत अवस्था में होता है, दूसरे ही क्षण वह अनेक प्रकार की योजनाएं बनाने लग जाता है। भावों का बदलाव होता रहता है।

व्यक्ति को अनेक चित्तों वाला होने के साथ-साथ किसी विषय पर एक चित्तवाला भी होना चाहिए। धर्म के प्रति आस्था के विषय में व्यक्ति का एक चित्तवाला होना भी अच्छी बात हो सकती है। देव, गुरु और धर्म के प्रति आस्था, समर्पण का भाव है, इसमें व्यक्ति को एक चित्त वाला होना चाहिए।

आचार्यश्री की सन्निधि में पहुंचे साध्वी प्रतिभाश्रीजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी और सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। साध्वी शशिरेखाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

मुनि तन्मय कुमारजी ने गीत की प्रस्तुति दी। मुनि यशवंतकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत